हरिभूमि
सोनीपत भूमि
रोहतक, रविवार, 26 अक्टूबर 2025

तापमान
अधिकतम 34.2 डिग्री
न्यूनतम 14.6 डिग्री

11 मेयर की अगुवाई में स्वच्छता अभियान शुरू

12 वॉलीबॉल में अंबर सदन ने बाजी मारी

खबर संक्षेप

आज सुबह दस से तीन बजे तक बिजली बाधित रहेगी

सोनीपत। बिजली निगम की ओर से रविवार सुबह 10 बजे से दोपहर 3 बजे तक 11केवी सब्जी मंडी व कपड़ा मार्केट फीडर पर मरम्मत की जाएगी। उपमंडल अभियंता प्रदीप खोखर ने बताया कि शिव कॉलोनी, कपड़ा मार्केट, ओल्ड हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, हलवाई हट्टा, सुदामा नगर, धानक बस्ती, शिवाजी कॉलोनी में बिजली आपूर्ति बंद रहेगी।

मोबाइल हैक कर खाते से 7.39 लाख निकाले

सोनीपत। जिले में साइबर ठगी के मामले लगातार बढ़ते जा रहे हैं। ताजा मामला गांव नाथूपुर में सामने आया है। जहां पर बेयरिंग कंपनी के कर्मी का मोबाइल हैक कर साइबर ठगों ने 7.39 लाख रुपये उड़ा लिये। दिल्ली के नरेला स्थित गांव बांकनेर निवासी प्रवीण कुमार ने पुलिस को बताया कि वह नाथूपुर स्थित बेयरिंग प्राइवेट लिमिटेड में कार्यरत हैं। 23 अक्टूबर को उनका मोबाइल हैक कर लिया गया। इसके कुछ ही मिनटों बाद उनके बैंक खाते से पांच लाख रुपये निकालने का मैसेज आया। थोड़ी देर बाद 65 हजार और 40 हजार रुपए क्रेडिट होने का संदेश मिला, जो कि किसी फर्जी लोन ट्रांजेक्शन से जुड़े थे। इसके बाद उनके खाते से 1.77 लाख रुपये और 62 हजार रुपये निकालने के मैसेज आए। इस तरह उनके खाते से 7.39 लाख रुपये की ठगी हो गई। राशि फर्जी वेबसाइट और जाली दस्तावेजों से खोले गए खातों में ट्रांसफर की गई।

सड़क हादसे में सेल्समैन की मौत

सोनीपत। महलाना रोड पर दो बाइक की टक्कर में एक व्यक्ति की मौत हो गई। मृतक वाहन कंपनी में सेल्समैन के तौर पर कार्यरत था। जानकारी अनुसार गांव भठगांव के रहने वाले अक्षय दिल्ली के नरेला स्थित मारुति सुजुकी कंपनी में सेल्समैन के पद पर कार्यरत था। अक्षय रात करीब 11 बजे बाइक से घर लौट रहा था। इसी दौरान दहिया फार्म हाउस के पास सामने से आ रही एक अन्य बाइक ने उसे टक्कर मार दी। हादसे में अक्षय गंभीर रूप से घायल हो गया। राहगीरों ने अक्षय के स्वजन और पुलिस को सूचना दी। जब स्वजन मौके पर पहुंचे, तब तक पुलिस अक्षय को नागरिक अस्पताल ले जा चुकी थी। जहां चिकित्सक ने उसे मृत घोषित कर दिया। अक्षय के पिता ने पुलिस को शिकायत दी है कि हादसा दूसरी बाइक सवार की लापरवाही के कारण हुआ है। फिलहाल थाना सदर पुलिस ने मामला दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है।

सोनीपत अनाज मंडी में धान खरीद ठप, किसानों ने प्रदर्शन कर धरना दिया

बीकेयू का ऐलान- आज से खरीद शुरू नहीं हुई तो जिला मुख्यालय का घेराव

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

जिले की नई अनाज मंडी में पीआर धान की खरीद बंद होने से नाराज किसानों ने शनिवार को भारतीय किसान यूनियन (एकता सिद्धूपुर) के बैनर तले मार्केट कमेटी गेट पर धरना दिया। करीब तीन घंटे चले इस धरने के बाद हाफेड अधिकारियों और किसान नेताओं के बीच बैठक हुई, जिसमें अधिकारियों ने आश्वासन दिया कि रविवार से मंडी में खरीद सुचारू रूप से शुरू कराई जाएगी। किसान नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि रविवार को खरीद नहीं हुई तो वे जिला मुख्यालय का घेराव करेंगे। किसान नेताओं ने बताया कि 13 अक्टूबर को जिन किसानों की ढेरियों के गेट पास कटे थे, आज तक न तो उनकी फसल खरीदी गई और न ही रजिस्टर में खरीद न होने का कारण दर्ज किया गया। इससे अधिकारियों की नीयत पर सवाल खड़े होते हैं। किसानों ने आरोप लगाया कि सरकारी खरीद नीति सिर्फ कागजों तक सीमित है जबकि मंडियों में किसान परेशान हैं। धरने के दौरान प्रशासन की ओर से पहुंचे अधिकारियों ने किसानों की शिकायतों को सुना और मिलर्स से बातचीत कर जल्द समाधान का भरोसा दिया। अधिकारियों ने कहा कि रविवार से खरीद पूरी पारदर्शिता के साथ शुरू कर दी जाएगी।

किसान नेताओं का आरोप : मिलर्स 'कोर्ड वर्ड' के जरिए किसानों को लूटने की साजिश रच रहे

किसान नेता अभिमन्यु कोहाड़ ने कहा कि सरकार द्वारा एमएसपी पर फसलों की खरीद के दावे पूरी तरह से खोखले साबित हो रहे हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि मंडी में मिलर किसानों को "कोड वर्ड" के जरिए लूटने की साजिश रच रहे हैं। कोहाड़ ने बताया कि पिछले 4-5 दिन तक कोई मिलर मंडी में नहीं आया। जब किसानों ने विरोध शुरू किया, तब एक मिलर मंडी में पहुंचा लेकिन उसने किसानों के गेट पास पर "ए, बी, सी, डी, ई" जैसे कोड लिखकर 5 से 15 किलो प्रति क्विंटल तक कट लगाने की बात कही, जिसका किसानों ने कड़ा विरोध किया।

बड़ा प्रदर्शन करने की तैयारी में किसान

धरने में संगठन के जिला अध्यक्ष अजित दहिया, सुनील जटराणा, पप्पू सरोहा, कृष्ण तुर्कपुर, शक्ति सिसाना, राज सिंह हलालपुर, बुधराम कोहाड़ सहित बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे। किसान नेताओं ने स्पष्ट कहा कि यदि प्रशासन ने वादे के अनुसार कल तक खरीद नहीं कराई तो वे जिला मुख्यालय पर बड़ा प्रदर्शन करेंगे।

सेक्टर-7 के पास रोने की आवाज सुनकर मनोज ने दिखाई इंसानियत

झाड़ियों में मिला नवजात चाय विक्रेता ने बचाया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

शहर के सेक्टर-7 क्षेत्र में शनिवार सुबह इंसानियत को झकझोर देने वाला मामला सामने आया, जहां झाड़ियों में एक नवजात बच्चा रोता हुआ मिला। बच्चे की आवाज सुनकर पास में चाय बेचने वाले बुजुर्ग मनोज ने तुरंत मौके पर पहुंचकर उसे गोद में उठाया और उसकी जान बचाई। मनोज ने तुरंत अपने दामाद अमरजीत को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस को मामले की जानकारी दी गई। जानकारी के अनुसार, मनोज उत्तर प्रदेश के गढ़मुक्तेश्वर के रहने वाले हैं और सेक्टर-7 के पास चाय की दुकान चलाते हैं। शनिवार सुबह वह दुकान पर काम कर रहे थे, तभी झाड़ियों की ओर से बच्चे के रोने की आवाज आई। जब उन्होंने जाकर देखा तो वहां एक नवजात बच्चा चादर में लिपटा पड़ा था। उन्होंने बच्चे को संभालते हुए तुरंत अपने दामाद अमरजीत को बुलाया। अमरजीत मौके पर पहुंचा और आसपास के लोगों को इकट्ठा कर थाना सेक्टर-27 पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस टीम मौके पर पहुंची और बच्चे को तुरंत अस्पताल में भर्ती कराया। जहां बच्चे की हालत स्थिर बनी हुई है।

पूछताछ की, लेकिन नहीं हुई पहचान

पुलिस ने आसपास के इलाके में पूछताछ की, लेकिन बच्चे की पहचान नहीं हो पाई है। थाना सेक्टर-27 पुलिस ने अमरजीत की शिकायत पर अज्ञात के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है और बच्चे के माता-पिता की तलाश शुरू कर दी है। स्थानीय लोगों ने मनोज और अमरजीत के मानवीय कदम की सराहना करते हुए कहा कि उनकी सूझबूझ और तत्परता से एक मासूम की जान बच गई। फिलहाल पुलिस हर पहलू की जांच कर रही है।

सीसीटीवी खंगाल रही पुलिस

बच्चे के माता-पिता की तलाश की जा रही है। आसपास के थानों को भी बच्चे की फोटो और पहचान संबंधित जानकारी भेजी गई है। आसपास के क्षेत्र में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज भी खंगाली जा रही है। जल्द ही माता-पिता का पता लगा लिया जाएगा।
-**कुलदीप**, कार्यकारी प्रभारी, थाना सेक्टर-27

16 वर्षीय किशोर की आत्महत्या मामला

परिजनों का अंतिम संस्कार से इनकार पुलिस ने समझाने पर माना परिवार

गन्नौर। दातौली गांव में साथियों की मारपीट से आहत होकर फांसी लगाने वाले 16 वर्षीय किशोर उत्तम गिरी के स्वजनों ने रविवार सुबह अंतिम संस्कार करने से मना कर दिया। स्वजन आरोपितों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग पर अड़े रहे। सूचना मिलने पर एसीपी ऋषिकांत और बड़ी थाना प्रभारी महेश कुमार पुलिस दल सहित मौके पर पहुंचे। उन्होंने स्वजनों को भरोसा दिलाया कि पुलिस मामले की गहनता से जांच कर रही है और जांच में यदि किसी भी व्यक्ति की संलिप्तता पाई जाती है तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। अधिकारियों के आश्वासन के बाद स्वजन शांत हुए और दोपहर करीब 12 बजकर 30 मिनट पर अंतिम संस्कार कर दिया गया। गौरतलब है कि गांव दातौली निवासी सुभाष गिरी के बेटे उत्तम गिरी का शव घर के पास ही पेड़ पर फांसी के फंदे से लटका मिला था। सुभाष गिरी का आरोप है कि गांव के कुछ युवकों की पिटाई से दुखी होकर उसके बेटे ने फांसी लगा ली थी। पुलिस ने इस मामले में जांच कर रही है। उत्तम गिरी के शव को पोस्टमार्टम के बाद शुक्रवार को ही स्वजनों को सौंप दिया गया था।

नाबालिग से दुष्कर्म का प्रयास, आरोपित गिरफ्तार

गोहाना। क्षेत्र में चिनाई मिस्त्री ने एक नाबालिग लड़की को बहाने से अपने पास बुलाया और कमरे में ले जाकर दुष्कर्म का प्रयास किया। लड़की उसके चुंगल से निकलकर घर पहुंची और स्वजन को बताया। पुलिस ने केस दर्ज करके आरोपित उत्तरप्रदेश में शामली के गांव हथछोवा के शाहरुख को गिरफ्तार कर लिया।एक व्यक्ति ने पुलिस को शिकायत दी कि गुरुवार को शाहरुख उनके साथ वाले प्लाट में चिनाई कर रहा था। उसने उसकी नाबालिग लड़की को बहलाकर अपने पास बुलाया और कमरे में ले जाकर गलत काम करने की कोशिश की। पुलिस ने केस दर्ज करके नाबालिग लड़की के मजिस्ट्रेट के सामने बयान दर्ज कराए और महिला विशेषज्ञ से काउंसलिंग करवाई।

छठ के लिए सज गए बाजार

सोनीपत। छठ महापर्व को लेकर जिले के प्रवासियों में उत्साह रहा। जगह-जगह बाजार सज गए।

आर्मी में नौकरी और शेयर मार्केट में मुनाफे का लालच देकर दो करोड़ रुपये ठगे

गन्नौर। आर्मी में नौकरी दिलाने और शेयर मार्केट में बड़े मुनाफे का वादा कर ठगी करने का एक मामला सामने आया है। पांची जाटान के किसान पवन ने आरोप लगाया है कि भठगांव निवासी सुनील, उसकी पत्नी ज्योति, पिता कृष्ण और माता राजपति ने मिलकर फर्जी दस्तावेज बनवाकर तथा नौकरी का झांसा दे कर करीब दो करोड़ रुपये हड़प लिये। पवन ने इस संबंध में थाना गन्नौर में शिकायत दी है। शिकायत में पवन ने बताया कि उसने सितंबर 2024 में अपनी जमीन बेचकर निवेश और नया कारोबार शुरू करने की तैयारी की थी। इसी दौरान भठगांव निवासी सुनील से उसकी पहचान हुई। सुनील ने खुद को सेना में पदस्थ बताकर उसे आर्मी में नौकरी दिलवाने का भरोसा दिया और इसके लिए दस्तावेज बनवाने व अन्य खर्च बताकर पहली 9 लाख रुपये लिए। इसके बाद सुनील के बार-बार कहने पर उसने अलग-अलग बार में करीब दो करोड़ रुपये उसे सौंप दिए।

पैसे देने से इनकार

जब पवन ने पैसे वापस मांगे तो आरोपित सुनील व उसके परिवार ने पैसे लौटाने से मना कर दिया। आरोप है कि आरोपित सुनील ने उसे और उसके परिवार को जान से मारने की धमकी दी। पुलिस ने आरोपित सुनील, उसकी पत्नी ज्योति, पिता कृष्ण और माता राजपति के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

प्राइवेट फाइनेंस बैंक में आग लगी, दस्तावेज व सामान जला

गोहाना। शनिवार सुबह गोहाना में आंबेडकर चौक के निकट प्राइवेट फाइनेंस बैंक में आग लग गई। आगजनी की इस घटना में बैंक के अंदर रखे दस्तावेज, फर्नीचर, कम्प्यूटर व अन्य सामान जल गया, जिससे लाखों का नुकसान हो गया। सूचना देने पर दमकल विभाग और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। आग लगने का कारण शार्ट सर्किट बताया जा रहा है। आंबेडकर चौक के निकट एक दो मंजिला भवन में दो प्राइवेट बैंक चल रहे हैं। भूतल पर आइआइएफएल फाइनेंस कंपनी का कार्यालय है। पहली मंजिल पर एयू स्माल फाइनेंस बैंक है।

दमकल विभाग ने डेढ़ घंटे में काबू पाया

शनिवार सुबह लगभग आठ बजे पड़ोसी दुकानदार पहुंचे तो एयू स्माल फाइनेंस बैंक के यहां से धुआं निकालता नजर आया। इस पर बैंक के कर्मी अमित सुरा को सूचना दी। दूसरी तरफ दमकल विभाग के केंद्र और पुलिस को सूचना दी गई। कुछ ही देर बाद पुलिस और दमकल की टीम मौके पर पहुंची। दमकल विभाग की टीम सीढ़ियों के रास्ते से ऊपर गई और शीशे तोड़े गए। फायरब्रिगेड की मदद से लगभग डेढ़ घंटे में आग पर काबू पाया जा सका। सुरा ने बताया कि बैंक के अंदर का पूरा फर्नीचर, दस्तावेज, कम्प्यूटर, एसी व अन्य सामान जल गया। अमित ने बताया कि शार्ट-सर्किट के चलते आग लगी है।

जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी के कार्यालय पर शिक्षक करेंगे प्रदर्शन

सोनीपत। हरियाणा विद्यालय अध्यापक संघ की जिला कार्यकारिणी ने बताया कि अध्यापकों की मांगों को लेकर संघ विरोध प्रदर्शन करेगा। जिला प्रधान नरेंद्र चहल, जिला सचिव दिनेश छिक्कारा, राज्य सचिव जोगिंदर सिंह, जिला कोषाध्यक्ष रोहताश गंगाना ने बताया जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी के कार्यालय पर अध्यापकों के लंबे समय से एसीपी, 10+2 में 50% से कम अंक वाले एसीपी लगवाने मेडिकल बिलों के भुगतान, पिछले सत्र की बकाया एलटीसी भुगतान, कंफर्मेशन, बिजली बिलों का बजट, अनेक कार्य लंबित हैं, जिससे अध्यापक वर्ग में भारी रोष है।

अनदेखी का आरोप

बार-बार अधिकारियों को अवगत कराने के उपरांत भी समस्याएं ज्यों की त्यों बनी हुई है, इसलिए अध्यापक संघ ने फैसला किया है कि 30 अक्टूबर को शाम तीन से पांच बजे तक जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी के कार्यालय सोनीपत पर जोरदार प्रदर्शन किया जाएगा इसके साथ ही ज्ञापन सौंपा जाएगा।

एनएच-44 पर शुरू होगा फ्लाईओवर मरम्मत कार्य, कई दिनों तक रहेगी एक दिशा की लेन बंद

बहालगढ़, मुरथल व गन्नौर फ्लाईओवर पर चरणबद्ध तरीके से होंगे सुधार कार्य, पुलिस ने जारी की ट्रैफिक एडवाइजरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶ सोनीपत

दिल्ली-अंबाला राष्ट्रीय राजमार्ग (एनएच-44) पर यात्रा करने वाले वाहन चालकों को आने वाले दिनों में असुविधा का सामना करना पड़ सकता है। नेशनल हाईवे अथॉरिटी ऑफ इंडिया (एनएचएआई) ने बहालगढ़, मुरथल और गन्नौर फ्लाईओवरों पर गड्ढों की मरम्मत और सड़क सतह के सुधार कार्य को लेकर ट्रैफिक डायवर्जन योजना तैयार की है। मरम्मत कार्य के दौरान फ्लाईओवर की एक दिशा की लेन को अस्थायी रूप से बंद रखा जाएगा और वाहनों को सर्विस रोड (संपर्क मार्ग) से निकाला जाएगा। एनएचएआई ने यह जिम्मेदारी मेसर्स नेक्स्ट इंफ्रा एमसीपी हाईवेज प्राइवेट लिमिटेड कंपनी को सौंपी है, जो चरणबद्ध तरीके से यह कार्य करेगी। विभाग का कहना है कि प्रयास रहेगा कि यातायात पर न्यूनतम प्रभाव पड़े और काम तेजी से पूरा हो। मरम्मत कार्य के दौरान पुलिस की तैनाती, सुरक्षा संकेतक और डायवर्जन बोर्ड लगाए जाएंगे ताकि यात्रियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो। एनएचएआई अधिकारियों के अनुसार, यह कार्य लंबे समय से आवश्यक था, क्योंकि बारिश और लगातार भारी वाहनों की आवाजाही से इन फ्लाईओवरों पर जगह-जगह गड्ढे बन गए थे। मरम्मत के बाद सड़क की गुणवत्ता में सुधार होगा और यातायात अधिक सुरक्षित और सुगम बन सकेगा।

> ***मरम्मत कार्य के दौरान पुलिस की तैनाती, सुरक्षा संकेतक और डायवर्जन बोर्ड लगाए जाएंगे***

मरम्मत कार्य का ये रहेगा शेड्यूल

- बहालगढ़ फ्लाईओवर : 25 अक्तूबर शाम 7 बजे से 26 अक्तूबर सुबह 8 बजे तक (दाहिनी लेन बंद)
- मुरथल फ्लाईओवर : प्रथम चरण : 27 अक्तूबर शाम 7 बजे से 28 अक्तूबर सुबह 8 बजे तक (बाईं लेन बंद)
- मुरथल फ्लाईओवर : दूसरा चरण : 5 नवंबर शाम 7 बजे से 6 नवंबर सुबह 8 बजे तक (दाहिनी लेन बंद)
- गन्नौर फ्लाईओवर : पहला चरण : 7 नवंबर शाम 7 बजे से 8 नवंबर सुबह 8 बजे तक (बाईं लेन बंद)
- गन्नौर फ्लाईओवर : दूसरा चरण : 9 नवंबर शाम 7 बजे से 10 नवंबर सुबह 8 बजे तक (दाहिनी लेन बंद)

यातायात नियंत्रण के लिए विशेष इंतजाम

पुलिस प्रवक्ता रविंद्र सिंह ने बताया कि सभी संबंधित स्थानों पर यातायात नियंत्रण के लिए विशेष इंतजाम किए जाएंगे। वाहनों की आवाजाही को सुचारू बनाए रखने के लिए अतिरिक्त पुलिसकर्मी तैनात रहेंगे और मार्गदर्शन के लिए संकेतक बोर्ड लगाए जाएंगे। उन्होंने वाहन चालकों से अपील की कि वे धैर्य बनाए रखें और एनएचएआई द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का पालन करें।

रात के समय होगा अधिकतर कार्य

विभाग ने बताया कि ट्रैफिक पर न्यूनतम असर के लिए अधिकतर कार्य रात्रि के समय किया जाएगा। इस दौरान एक दिशा की लेन पर यातायात रोका जाएगा, जबकि दूसरी दिशा में वाहन सीमित गति से गुजर सकेंगे। दिन के समय सभी लेन खुली रहेंगी ताकि लोगों की यात्रा में कोई बड़ी बाधा न आए। एनएचएआई के अधिकारियों का कहना है कि यदि मौसम अनुकूल रहा तो सभी मरम्मत कार्य तय समयसीमा में पूरे कर लिए जाएंगे। कार्य पूरा होने के बाद फ्लाईओवरों को मजबूती मिलेगी।

सड़क की सुरक्षा और सुगम यातायात के लिए मरम्मत कार्य जरूरी है। विभाग का प्रयास रहेगा कि कार्य निर्धारित समय में पूरा कर लिया जाए, ताकि यात्रियों को ज्यादा परेशानी न हो।
- **जगभूषण शर्मा**, परियोजना निदेशक, एनएचएआई

एशियन गेम्स में भारत का प्रतिनिधित्व करेगा रवि घणघस

गोहाना। बहरीन में चल रहे यूथ एशियन गेम्स में बुटाना गांव स्थित जनता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय का विद्यार्थी रवि घणघस गोला फैंकने की प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेगा। रवि घणघस जिला जींद के गांव भंभेवा का निवासी है।

जनता शिक्षण संस्थान के अध्यक्ष अजीत सांगवान और सचिव रामनिवास सांगवान ने रवि को शुभकामनाएं दी। विद्यालय के प्राचार्य मनोज सांगवान ने बताया कि बहरीन में 21 अक्तूबर से यूथ एशियन गेम्स: 2025 चल रहे हैं जो 30 अक्तूबर तक आयोजित होंगे। रवि घणघस इन खेलों में 26 अक्तूबर को गोला फैंकने की प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करेगा। रवि के पिता जगबीर सिंह घणघस कबड्डी कोच व मां गृहिणी हैं। रवि ने गोला फैंकने का प्रारंभिक प्रशिक्षण अपने पिता के पास गांव लुदाना में महारानी लक्ष्मीबाई कन्या खेल अकादमी में प्राप्त किया।

ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे ही पैसे निकालना कितना सही

अपडेट | बिजनेस डेस्क

- पहले सारा पैसा निकालने पर नहीं मिलती मासिक पेंशन, पेंशन के लिए लगातार दस ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी
- ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रहेगी

अगर आप नौकरीपेशा हैं और ईपीएफ (ईपीएम) में योगदान करते हैं, तो आपके वेतन का एक हिस्सा ईपीएस यानी एंप्लाईज पेंशन स्कीम में भी जाता है। बहुत से लोग यह सोचते हैं कि नौकरी छोड़ने या बीच में ब्रेक आने पर इस पैसे को फौरन निकाल लेना बेहतर है, लेकिन क्या वाकई ईपीएस के 10 साल पूरे होने से पहले सारे पैसे निकाल लेना सही फैसला है? कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने हाल ही में ईपीएस से जुड़े कुछ बदलाव किए हैं, हालांकि, इन बदलावों का असर पेंशन पाने की उम्र यानी 58 साल की एलिजिबिलिटी पर नहीं पड़ेगा। पेंशन पाने के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक लगातार ईपीएस का हिस्सा रहना जरूरी है। अगर किसी सदस्य की नौकरी चली जाती है और वह ईपीएस (ईपीएस) के लिए योगदान जारी नहीं रखना चाहता, तो वह 10 साल पूरे होने से पहले अपने सारे पैसे निकाल सकता है. पहले यह फाइनल सेटलमेंट नौकरी चले जाने के 2 महीने बाद किया जा सकता था, लेकिन अब इसके लिए 2 महीने नहीं, बल्कि 36 महीने यानी 3 साल तक इंतजार करना होगा, यानी ईपीएफओ ने अब ईपीएस के पैसे निकालना पहले की तुलना में ज्यादा मुश्किल बना दिया है, इस बदलाव का उद्देश्य यह है कि अगर ईपीएस मेंबर को 36 महीने के भीतर दोबारा नौकरी मिल जाती है, तो उसकी ईपीएस मेंबरशिप और पेंशन एलिजिबिलिटी बनी रह सके।

10 साल से पहले पैसे निकालने का असर

ईपीएफओ के नियमों के मुताबिक आप लगातार नौकरी के 10 साल पूरे होने से पहले ईपीएस से पैसे निकाल सकते हैं। लेकिन ऐसा करने पर आप आगे चलकर मिलने वाली पेंशन के लिए एलिजिबल नहीं रह जाएंगे। यानी रिटायरमेंट के बाद ईपीएस के जरिये मिलने वाली मंथली पेंशन की सुविधा खत्म हो जाएगी।ईपीएफओ के अनुसार रिटायरमेंट के समय पेंशन पाने की एलिजिबिलिटी के लिए किसी सदस्य का कम से कम 10 साल तक ईपीएस में सदस्य रहना जरूरी है। इसका मतलब यह है कि जल्दबाजी में पैसे निकालने से आप अपनी लंबी अवधि की आर्थिक सुरक्षा खो सकते हैं।

क्या कहते हैं आंकड़े

दिलचस्प बात यह है कि ईपीएफओ के आंकड़ों के मुताबिक करीब 75 प्रतिशत सदस्य 4 साल की सर्विस के भीतर ही पूरा पेंशन अमाउंट निकाल लेते हैं, ऐसे में उन्हें भविष्य की पेंशन और आर्थिक सुरक्षा का लाभ नहीं मिल पाता है।

फैमिली पेंशन का भी नुकसान

अगर कोई सदस्य 10 साल से पहले पैसे नहीं निकालता है और उसका निधन हो जाता है, तो उसके परिवार को अगले 3 साल तक पेंशन का लाभ मिलता है, लेकिन अगर सदस्य ने पूरे पैसे निकाल लिए हैं, तो परिवार यह लाभ नहीं ले सकता। यही वजह है कि ईपीएफओ ने ईपीएस की सदस्यता को 10 साल पूरे होने तक जारी रखने के लिए नियमों में बदलाव किए हैं। ईपीएफओ का कहना है कि ईपीएस के पैसे निकालने के लिए दो महीने की जगह 36 महीने इंतजार करने का नया प्रावधान इसीलिए लाया गया है ताकि सदस्यों की 10 साल की एलिजिबिलिटी पूरी हो जाए और उनके परिवार को भी पेंशन का लाभ मिल सके।

किन हालात में निकाल सकते हैं पैसे

हालांकि कुछ खास परिस्थितियों में पैसे निकालने का फैसला सही भी हो सकता है। मिसाल के तौर पर अगर किसी व्यक्ति की आमदनी अच्छी खासी है या उसने पहले से अपनी रिटायरमेंट प्लानिंग की हुई है, जिसके चलते वह रिटायरमेंट के बाद रेगुलर इनकम या फेमिली पेंशन पाने के लिए ईपीएस के भरोसे नहीं है, तो जरूरत पड़ने पर अपने पैसे निकाल सकता है। लेकिन जिनकी आय सीमित है और दूसरा कोई रिटायरमेंट प्लान नहीं है, तो उनके लिए ईपीएस को जारी रखना भविष्य की सुरक्षा के लिहाज से बेहतर विकल्प है। ईपीएस पेंशन स्कीम लंबे समय तक आर्थिक सुरक्षा देने के लिए बनाई गई है। अगर आप 10 साल पूरे होने से पहले पैसा निकालते हैं, तो भविष्य में पेंशन नहीं मिलेगी। साथ ही फेमिली पेंशन के तौर पर परिवार को मिलने वाली सुरक्षा का लाभ भी चला जाएगा। इसलिए नौकरी में ब्रेक या अस्थायी परेशानी की हालत में जल्दबाजी करने की बजाय सोच-समझकर फैसला करने में ही समझदारी है।

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

- यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वालों के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है
- पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12% पैसा सोने में निवेश करते थे
- अब बाजार की तेजी को देखते हुए निवेशक 18 से 22% सोने में निवेश करने लगे

गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला

जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती जाती है

सोने में निवेश सबसे सुरक्षित, लेकिन जरूरत से ज्यादा भी ठीक नहीं

सोने को शुरू से ही निवेश का सबसे सुरक्षित माध्यम माना जाता रहा है। इसने निवेशकों को कभी रुसवा नहीं किया। पिछला रिकॉर्ड देखा जाए तो सोने ने कभी भी निगेटिव रिटर्न नहीं दिया। यह चाहे किसी भी रूप में हो निवेशकों को मालामाल करता रहा है। हालांकि बाजार के जानकारों का कहना है कि सोने में निवेश करना सही है, लेकिन यह जरूरत से ज्यादा नहीं होना चाहिए। हाल फिलहाल में सोने में हुई बढ़ोतरी को देखते हुए निवेशकों ने अपने पोर्टफोलियो में इसकी हिस्सेदारी बढ़ा दी है। पहले निवेशक पूरे पोर्टफोलियो की तुलना में 10 से 12 फीसदी पैसा सोने में निवेश करते थे, लेकिन अब निवेशक 18 से 22 फीसदी सोने में निवेश करने लगे हैं। यहां तक तो ठीक हैं, लेकिन इससे अधिक रिस्की हो सकता है। इस साल आई जबर्दस्त तेजी की वजह से सोना चर्चा में है। 21 अक्टूबर को 5 फीसदी की गिरावट के बावजूद गोल्ड ने निवेशकों को मालामाल किया है। सवाल है कि आखिर गोल्ड में इतनी तेजी की क्या वजह है? इस सवाल का जवाब पाने के लिए हमें ग्लोबल इकोनॉमी में गोल्ड की भूमिका को समझना होगा।

1944 का ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट

सेकेंड वर्ल्ड वॉर के बाद 1944 में ब्रेटन वुड्स एग्रीमेंट हुआ। तब अमेरिकी डॉलर में दुनिया के दूसरे देशों की करेंसीज की कीमत तय करने पर सहमति बनी। डॉलर की कीमत गोल्ड पर आधारित थी। 35 डॉलर एक औंस सोने के बराबर था। इस व्यवस्था से ग्लोबल इकोनॉमी को तब स्थिरता मिली, जब उसे इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी। लेकिन, अमेरिकी इकोनॉमी का आकार बढ़ने पर सरकार ने ज्यादा डॉलर छापे। एक समय ऐसा आया जब कुल डॉलर का मूल्य गोल्ड रिजर्व से ज्यादा हो गया।

1960 के दशक में एक कमोडिटी के रूप में उभरा गोल्ड

1960 का दशक आते-आते इस असंतुलन की अनदेखी करना मुश्किल हो गया। 1971 में अमेरिकी राष्ट्रपति निक्सन ने एक बड़ा कदम उठाया। उन्होंने डॉलर को गोल्ड में बदलने की सुविधा बंद कर दी, जिससे ब्रेटन वुड्स सिस्टम खत्म हो गया। इससे मॉनेटरी सिस्टम में गोल्ड की तय भूमिका खत्म हो गई। इसके बाद गोल्ड एक कमोडिटी बनकर रह गया। इसकी कीमतों पर मार्केट फोर्सेज का असर पड़ना शुरू हो गया, लेकिन, निवेश के सुरक्षित विकल्प को लेकर इसकी भूमिका बनी रही।

केंद्रीय बैंकों ने समझा गोल्ड का महत्व

जैसे-जैसे डॉलर कमजोर होता गया और इनफ्लेशन बढ़ता गया, वैसे-वैसे गोल्ड की अपील बढ़ती गई। जब कभी डॉलर में बड़ी कमजोरी आई या इनफ्लेशन में उछाल आया, गोल्ड निवेश के भरोसेमंद जरिया के रूप में सामने आता रहा। क्राइसिस के समय भी इसकी चमक बनी रही। इससे यह माना गया कि जब सबकुछ अनिश्चित दिख रहा तो तब भी गोल्ड में वेल्थ

की वैल्यू घटने से बचाने की क्षमता है। इसके बाद दुनिया के केंद्रीय बैंकों ने गोल्ड खरीदना शुरू कर दिया। इसका मकसद विदेशी मुद्रा भंडार का डायवर्सिफिकेशन था।

गोल्ड में तेजी की बड़ी वजहें

बीते कुछ सालों में गोल्ड और अमेरिकी डॉलर के बीच दिलचस्प संबंध देखने को मिला है। जब डॉलर में कमजोरी आती है तो गोल्ड की चमक बढ़ती है। इससे यह दूसरी करेंसीज में इनवेस्ट करने वाले इनवेस्टर्स के लिए और अट्रैक्टिव हो जाता है। बॉन्ड्स की रियल यील्ड ने भी इसमें अहम भूमिका निभाई। जब रियल यील्ड घट जाती है तो गोल्ड की अपील बढ़ जाती है। जब हम साल 2025 के अंत के करीब है, गोल्ड 4000 डॉलर प्रति औंस से ऊपर है। गोल्ड की तेजी में डॉलर में कमजोरी, बॉन्ड्स की कम रियल यील्ड और सेंट्रल बैंकों के बीच गोल्ड की ज्यादा डिमांड का हाथ है। इसके अलावा जियोपॉलिटिकल टेंशन का असर भी इसमें शामिल है।

इकोनॉमी में गोल्ड की बढ़ती भूमिका

गोल्ड में तेजी न सिर्फ इनवेस्टर्स के लिए अहम है बल्कि इसका आर्थिक महत्व भी है। उदाहरण के लिए भारत में आरबीआई के रिजर्व में डॉलर के अलावा गोल्ड भी है। जब गोल्ड में तेजी आती है तो आरबीआई के डॉलर रिजर्व की वैल्यू बढ़ जाती है। इससे इंडिया की फाइनेंशियल पोजीशन मजबूत होती है। गोल्ड का असर भारत में कंज्यूमर प्राइस इंडेक्स (सीपीआई) पर भी पड़ता है। उदाहरण के लिए सितंबर 2025 में गोल्ड की ज्यादा कीमतों की वजह से इंडिया के कोर इनफ्लेशन में मामूली उछाल देखने को मिला, जबकि फूड की कीमतों में गिरावट आई। इससे पता चलता है कि गोल्ड की भूमिका इकोनॉमी में कितनी ज्यादा है।

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद

गोल्ड में तेजी जारी रहने की उम्मीद है। इसकी कई वजहें हैं। रियल यील्ड लगातार कम बनी हुई है। सेंट्रल बैंक के बीच गोल्ड की डिमांड बनी हुई है, लेकिन, इतिहास यह बताता है कि ऐसी तेजी के बाद गोल्ड दोबारा नई ऊंचाई पर पहुंचने से पहले कंसॉलिडेशन फेज में रहता है। इसलिए गोल्ड में तेजी जारी रहने की संभावना है, लेकिन इनवेस्टर्स को इसमें उतार चढ़ाव के लिए तैयार रहना चाहिए।

एक सीमा से ज्यादा निवेश सही नहीं

कई इनवेस्टर्स इनफ्लेशन से बचाव, करेंसी में कमजोरी और ग्लोबल इकोनॉमी में अनिश्चितता को देखते हुए गोल्ड में निवेश कर रहे हैं। लेकिन, गोल्ड में बहुत ज्यादा निवेश से आपके पोर्टफोलियो पर इसकी कीमतों में तेजी या कमजोरी का असर पढ़ना शुरू हो जाता है। ऐसे में बॉन्ड बड़ा रोल निभाता है। अनिश्चित समय में तो गोल्ड का प्रदर्शन अच्छा रहता है लेकिन, जब सबकुछ ठीक चल रहा होता है तो क्या होता है? बॉन्ड्स पोर्टफोलियो में स्टैबिलिटी लाता है। साथ ही इंटरेस्ट के रूप में इससे रेगुलर इनकम होती है। यह फायदा गोल्ड में नहीं है। ऐसे इनवेस्टर्स जिन्हें रेगुलर कैश की जरूरत पड़ती है, उनके डायवर्सिफायड पोर्टफोलियो में बॉन्ड्स का होना जरूरी है।

ऑफर देखकर न ललचाएं ज्यादा जरूरत होने पर ही पर्सनल लोन उठाएं, वरना यह बढ़ा सकता है परेशानी

पर्सनल लोन एग्रीमेंट पर साइन से पहले चेक करें कुछ बातें, वरना पड़ेगा पछताना

"बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं जो करती हैं परेशान, ऐसे में ऐसी शर्तों पर पहले से ही नजर दौड़ा लें, दिक्कत नहीं होगी

अलर्ट | बिजनेस डेस्क

कई बार हमें अचानक पैसों की जरूरत पड़ जाती है चाहे मेडिकल इमरजेंसी हो, शादी का खर्च या फिर किसी जरूरी ट्रिप का खर्चा। ऐसे में पर्सनल लोन एक आसान रास्ता लगता है। कुछ क्लिक या एक फॉर्म भरकर पैसा खाते में आ जाता है, लेकिन यही आसानी कई बार बाद में परेशानी का कारण भी बन जाती है, अगर आपने लोन एग्रीमेंट के कागजों को ध्यान से नहीं पढ़ा। बैंक और एनबीएफसी लोन एग्रीमेंट में कई ऐसी शर्तें जोड़ देते हैं, जिन पर नजर न गई तो बाद में पछताना पड़ सकता है।

प्रीपेमेंट और फोरक्लोजर चार्जेज

कई लोग सोचते हैं कि लोन जल्दी चुका देंगे तो ब्याज बच जाएगा, लेकिन हर बैंक या फाइनेंशियल इंस्टिट्यूशन इसकी इजाजत नहीं देता। अगर आप लोन तय समय से पहले चुका देते हैं, तो आपको प्रीपेमेंट या फोरक्लोजर चार्जेज देने पड़ सकते हैं, जो आम तौर पर बाकी बचे लोन अमाउंट का 2% से 5% तक होता है। इसलिए साइन करने से पहले यह जरूर समझ लें कि आपका बैंक या एनबीएफसी पर्सनल लोन जल्दी चुकाने पर कितने चार्जेज वसूलेगा।

लेट पेमेंट और डिफॉल्ट पेनॉल्टी

एक भी ईएमआई छूटना आपके क्रेडिट स्कोर को नुकसान पहुंचा सकता है, लेकिन इसके साथ ही, बैंक लेट पेमेंट पर पेनाल्टी चार्ज भी वसूलते हैं। कुछ बैंक एक तय रकम लेते हैं, तो कुछ बाकी बचे ईएमआई अमाउंट का एक प्रतिशत। यही वजह

है कि देर से भुगतान करने पर ब्याज से ज्यादा रकम चुकानी पड़ सकती है। इससे बचने का सबसे आसान तरीका है ऑटो डेबिट ऑर्डर लगाना, ताकि ईएमआई समय पर कट जाए।

छिपे हुए प्रोसेसिंग व सर्विस चार्जेस

बैंक जब लोन का ब्याज दर बताते हैं, तो वह तो साफ होता है, लेकिन बाकी के चार्जेस अक्सर ध्यान नहीं जाते। जैसे प्रोसेसिंग फीस, डॉक्युमेंटेशन फीस और जीएसटी आदि। यहां तक कि कुछ बैंक फोरक्लोजर लेटर या लोन स्टेटमेंट के लिए भी शुल्क वसूलते हैं। इसलिए हमेशा साइन करने से पहले बैंक से यह पूछें कि कुल मिलाकर आपकी जेब से कितनी रकम कटेगी। आखिरकार, जो लोन अमाउंट आपको मिलेगा, वह इन चार्जेस के बाद थोड़ी कम ही होगी।

ब्याज दर में बदलाव से जुड़ी शर्तें

अगर आपने फ्लोटिंग रेट वाला पर्सनल लोन लिया है, तो यह समझना जरूरी है कि ब्याज दर में बदलाव कब और कैसे होगा। कुछ बैंक हर तिमाही में रेट बदलते हैं, तो कुछ साल में एक बार. अगर ब्याज दरें बढ़ती हैं तो आपकी ईएमआई भी बढ़ सकती है। इसलिए एग्रीमेंट में दिए गए इस क्लॉज को जरूर पढ़ें ताकि बाद में बढ़ी हुई किस्त देखकर झटका न लगे।

बीमा और क्रॉस-सेलिंग की चाल

कई बैंक पर्सनल लोन के साथ एक बीमा पॉलिसी भी जोड़ देते हैं, जो बेरोजगारी, बीमारी या मृत्यु की स्थिति में लोन को कवर करती है। सुनने में यह सुरक्षा जैसा लगता है, लेकिन अक्सर यह बीमा वैकल्पिक होता है. कुछ बैंक इसे अनिवार्य बताकर जोड़ देते हैं। इसलिए साइन करने से पहले यह साफ कर लें कि क्या यह बीमा जरूरी है, और क्या उसकी प्रीमियम लागत वाजिब है।

हर शर्त को समझना बेहद जरूरी

पर्सनल लोन एक सुविधाजनक विकल्प जरूर है, लेकिन इसके साथ जुड़ी हर शर्त को समझना बेहद जरूरी है। छोटी-छोटी बातों पर ध्यान न देने से बाद में भारी ब्याज, चार्जेस या अन्य पेनाल्टी झेलनी पड़ सकती है। इसलिए अगली बार जब भी आप किसी लोन डॉक्यूमेंट पर साइन करें, तो जल्दबाजी न करें। हर पेज, हर क्लॉज को ध्यान से पढ़ें और समझें। आखिरकार, लोन से राहत तभी मिलेगी जब आप इसके हर नियम को समझदारी से निभाएंगे।

घर में कितनी रख सकते हैं चांदी कमाई पर कैसे लगता है टैक्स

बिजनेस डेस्क

निवेश की दुनिया में सोना के साथ एक और एसेट क्लास सबसे ज्यादा चर्चा में है, जो है चांदी। वजह इसमें मिल रहा सुपर रिटर्न। साल 2025 में रिटर्न के मामले में चांदी ने सोने को पीछे छोड़ दिया है। इस साल चांदी का रिटर्न 73फीसदी से अधिक रहा है। इससे निवेशकों के बीच चांदी की डिमांड बढ़ रही है, चाहे वह किसी भी फॉर्मेट में हो। तो यहां 2 बातें समझ लेना जरूरी है कि आप अपने घर में अधिक से अधिक कितना चांदी रख सकते हैं, ताकि इनकम टैक्स डिपार्टमेंट का कोई झंझट न हो। वहीं इससे होने वाली कमाई पर कितना टैक्स लगता है।

चांदी रखने पर लिमिट नहीं

सोने की तरह, चांदी (जैसे सिक्के, गहने, बर्तन आदि) रखने पर इनकम टैक्स एक्ट, 1961 के तहत कोई सीमा तय नहीं की गई है। अगर चांदी कानूनी तरीके से खरीदी गई या विरासत में मिली है, तो उस पर कोई रोक नहीं है। टैक्स तभी लगता है जब आप चांदी बेचते हैं और उस पर कैपिटल गेंस (लाभ) कमाते हैं। टैक्स सिर्फ बिक्री पर या छुपाई गई संपत्ति पाए जाने पर लगता है। हालांकि घर पर कितनी भी चांदी रखने की सीमा नहीं है, लेकिन अगर आपके पास ज्यादा चांदी है, तो उसकी खरीद के प्रमाण (बिल या रसीद) संभाल कर रखना बेहतर है। अगर आपने चांदी किसी ज्वेलर, डीलर या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म से खरीदी है, तो उसका असली बिल जरूर रखें। भविष्य में अगर कभी इनकम टैक्स विभाग जांच करता है, तो ये दस्तावेज आपके लिए सुरक्षा कवच बन सकते हैं।

चांदी की कमाई पर टैक्स

चांदी पर टैक्स के नियम की बात करें तो यह इस बात पर निर्भर करता है कि आपने फिजिकल सिल्वर (जैसे गहने, सिक्के, बार) खरीदी है या सिल्वर ईटीएफ या सिल्वर म्यूचुअल फंड में निवेश किया है, और आपने इसे कितने समय तक रखा है. इसलिए, टैक्स के नियम समझना जरूरी है ताकि आप सही निवेश निर्णय ले सकें।

फिजिकल फार्म में चांदी पर टैक्स

अगर आपने चांदी के गहने या सिक्के को 24 महीने से पहले बेच दिया, तो उस पर हुआ लाभ शॉर्ट-टर्म कैपिटल गेंस (एसटीसीजी) माना जाएगा और यह आपकी इनकम टैक्स स्लैब की दर के अनुसार टैक्स होगा, लेकिन आपने चांदी को 24 महीने से ज्यादा समय तक रखा, तो यह लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस (एलटीसीजी) माना जाएगा। अगर चांदी 23 जुलाई 2024 या उसके बाद खरीदी गई है, तो इस पर 12.5% टैक्स लगेगा और इंडेक्सेशन का लाभ नहीं मिलेगा। वहीं 23 जुलाई 2024 से पहले खरीदी चांदी पर 20% लॉन्ग-टर्म कैपिटल गेंस टैक्स लगेगा इंडेक्सेशन के साथ।

सिल्वर म्यूचुअल फंड और ईटीएफ पर टैक्स

अगर आपने सिल्वर ईटीएफ या म्यूचुअल फंड को 12 महीने के अंदर बेचा, तो यह एसटीसीजी माना जाएगा और इनकम टैक्स स्लैब रेट के हिसाब से टैक्स लगेगा। अगर 12 महीने से बाद बेचा, तो यह एलटीसीजी माना जाएगा और 12.5% टैक्स लगेगा, बिना इंडेक्सेशन बेनेफिट के।

चांदी की ज्वेलरी, बिस्कुट और सिक्कों पर टैक्स

चांदी (बार, सिक्के या गहने) के मूल्य पर 3 फीसदी जीएसटी लगता है, जबकि गहनों के मेकिंग चार्ज पर 5 फीसदी जीएसटी लगाया जाता है।

यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे

यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये भी कर सकेंगे पेमेंट

जानकारी | बिजनेस डेस्क

अब तक आपने म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल सिर्फ निवेश और रिटर्न कमाने के लिए किया होगा, लेकिन अब इसका इस्तेमाल पेमेंट करने में भी किया जा सकेगा। यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) के नए फीचर 'पे विद म्यूचुअल फंड' के जरिये अब निवेशक यूपीआई पेमेंट के लिए अपने लिक्विड म्यूचुअल फंड का इस्तेमाल कर सकेंगे। यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि निवेशकों को बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका भी देता है। यूपीआई के 'पे विद म्यूचुअल फंड' इस फीचर के जरिए आप अपनी लिक्विड म्यूचुअल फंड होल्डिंग से सीधे यूपीआई पेमेंट कर पाएंगे। मिसाल के तौर पर अगर आपने किसी फंड हाउस के लिक्विड फंड में निवेश किया है, और वह फंड इस सुविधा को सपोर्ट करता है, तो आप अपने उस निवेश का इस्तेमाल यूपीआई के जरिये किसी पेमेंट के लिए कर पाएंगे। जैसे ही आप यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी और पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे। इसे इस तरह समझिए कि यह फीचर लिक्विड म्यूचुअल फंड को एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करने की क्षमता देता है, लेकिन फर्क यह है कि यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है। इस सुविधा को फिलहाल आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड

क्यों खास है यह फीचर

लिक्विड फंड शॉर्ट-टर्म मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश करते हैं, जिनकी लिक्विडिटी बहुत ज्यादा होती है। ऐसे में जब जरूरत पड़े, तो निवेशक फौरन पैसे निकाल सकते हैं। अब 'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर से यह प्रॉसेस और आसान हो गई है, क्योंकि अब आपको पहले पैसा बैंक अकाउंट में ट्रांसफर करने की जरूरत नहीं। इसके अलावा यह फीचर आपके निवेश पर फुल लिक्विडिटी के बावजूद सेविंग अकाउंट से ज्यादा संभावित रिटर्न का फायदा भी देता है। सेविंग अकाउंट में जहां आम तौर पर 4% से कम सालाना ब्याज मिल रहा है, वहीं लिक्विड फंड इस समय करीब 6-7% तक का रिटर्न दे रहे हैं। यानी आपका पैसा बेकार पड़े रहने की बजाय बेहतर रिटर्न भी दे सकता है और जरूरत पर फौरन काम भी आ सकता है।

ऐसे आसान होगा पेमेंट

यूपीआई आज हर रोजमर्रा के लेनदेन का हिस्सा बन चुका है। किराने की दुकान से लेकर ऑनलाइन शॉपिंग तक, हम सभी इसका इस्तेमाल करते हैं। अब अगर यह पेमेंट सीधे म्यूचुअल फंड से हो जाए, तो आपको अलग-अलग ऐप्स में ट्रांसफर या रिडेम्प्शन की झंझट

- **यह फीचर न सिर्फ इस्तेमाल में आसान है, बल्कि बेहतर रिटर्न के साथ फ्लेक्सिबल कैश मैनेजमेंट का मौका देगा**
- **जैसे ही यूपीआई से पेमेंट करेंगे, उतनी रकम के बराबर यूनिट्स अपने आप रिडीम हो जाएंगी**
- **पैसे फौरन ट्रांसफर हो जाएंगे, लिक्विड म्यूचुअल फंड एक मिनी बैंक अकाउंट की तरह काम करेगा**
- **यहां आपका पैसा बेहतर मार्केट-लिंक्ड रिटर्न भी कमा रहा होता है,**
- **आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड और बजाज फिनसर्व एएमसी जैसे फंड हाउसेज ने लॉन्च किया**

नहीं झेलनी पड़ेगी। व्यक्तिगत निवेशकों के साथ-साथ छोटे बिजनेस के लिए भी यह फीचर बहुत मददगार साबित हो सकता है। वे अपने शॉर्ट-टर्म कैश को लिक्विड फंड में रखकर रिटर्न कमा सकते हैं और जरूरत पड़ने पर उसी से पेमेंट कर सकते हैं। यह कैश मैनेजमेंट का स्मार्ट और फ्लेक्सिबल तरीका है।

क्या यह सेविंग से बेहतर है?

कई मामलों में हां, लेकिन कुछ सावधानियां भी जरूरी हैं। सेविंग अकाउंट ज्यादा सुरक्षित होते हैं और उनमें 5 लाख रुपये तक के डिपॉजिट का इंश्योरेंस भी होता है। वहीं, लिक्विड फंड में थोड़ा मार्केट रिस्क रहता है. हालांकि यह रिस्क बहुत कम होता है, फिर भी अगर आपका लक्ष्य केवल सुरक्षा है, तो सेविंग अकाउंट ही बेहतर है।लेकिन अगर आप थोड़ा जोखिम लेने को तैयार हैं और चाहते हैं कि आपका पैसा फुल लिक्विडिटी के बावजूद बेहतर रिटर्न कमाए, तो नई सुविधा आपके लिए सही विकल्प हो सकती है। हां, यह ध्यान रखना जरूरी है कि आप जिस फंड में निवेश करें, उसकी लिक्विडिटी और रिडेम्प्शन प्रोसेस भरोसेमंद हो।

यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन

'पे विद म्यूचुअल फंड' फीचर निवेशकों के लिए सुविधा और रिटर्न दोनों को जोड़ता है। यह दिखाता है कि भारत में डिजिटल पेमेंट और म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री कितनी तेजी से एक-दूसरे के करीब आ रही है। जो निवेशक अपने पैसों को हर वक्त रिटर्न के लिहाज से इनवेस्ट रखना चाहते हैं, उनके लिए यह फीचर एक स्मार्ट ऑप्शन बन सकता है। बशर्ते वे इसके फायदों और रिस्क को समझकर इसका इस्तेमाल करें।

अच्छी तरह समझने के बाद करें इस्तेमाल

भले ही यह फीचर बेहद सुविधाजनक है, लेकिन निवेशकों को इसका इस्तेमाल करने से पहले कुछ बातें जरूर समझ लेनी चाहिए। लिक्विड फंड के रिटर्न अलग-अलग फंड हाउस में अलग-अलग हो सकते हैं, इसलिए औसत रिटर्न और एक्सपेंस रेशियो पर नजर रखना चाहिए. साथ ही यह जानना भी जरूरी है कि "इंस्टैंट रिडेम्प्शन" के साथ भी कुछ लिमिट्स या कट-ऑफ टाइम जुड़े हो सकते हैं। इसके अलावा, लिक्विड फंड से होने वाली कमाई पर टैक्स उसी तरह लगता है जैसे बैंक ब्याज पर. इसलिए इसे पूरी तरह इमरजेंसी फंड का विकल्प न मानें। अपने पैसे का कुछ हिस्सा हमेशा सेविंग अकाउंट में भी रखें ताकि किसी देरी की स्थिति में परेशानी न हो।

खबर संक्षेप

पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप के लिए कोमल का चयन

सोनीपत। जीवीएम गर्ल्स कालेज की पावर लिफ्टर कोमल अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जौहर दिखायेगी। कोमल का चयन भूटान में दिसंबर माह में होने वाली वर्ल्ड पावर लिफ्टिंग चैंपियनशिप के लिए हुआ है। उनकी इस उपलब्धि पर संस्था के प्रधान डा. ओपी परूथी व प्राचार्या डा. मंजुला स्पाह ने बधाई देते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा में सफल प्रदर्शन के लिए शुभकामनाएं भी दी।

बीए अंतिम वर्ष की छात्रा कोमल ने अपना वजन कम करने के लिए करीब एक वर्ष पूर्व जिम जाना शुरू किया, तब उनका वजन 85 किलोग्राम था। जिम में कोमल की लगन व मेहनत को देखते हुए उनमें विद्यमान काबिलियत को कोच जयप्रकाश ने पहचाना।

गर्वित का राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयन

सोनीपत। साउथ पॉइंट स्कूल के छात्र गर्वित (कक्षा 5वीं, मैरीगोल्ड) ने जिला स्तरीय स्केटिंग प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन करते हुए दोहरी सफलता हासिल की। प्रतियोगिता गोहाना में आरएसएफआई की ओर से आयोजित की गई थी। जिसमें गर्वित ने 500 मीटर और 1000 मीटर क्वाड रेस में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। उनके इस प्रदर्शन के आधार पर उनका चयन राज्य स्तरीय स्केटिंग प्रतियोगिता के लिए किया गया है। संस्थान के चेयरमैन दिलबाग सिंह खत्री ने गर्वित का गर्मजोशी से स्वागत किया और अन्य विद्यार्थियों को भी खेलों में प्रतिभागिता करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि गर्वित ने विद्यालय का नाम रोशन किया है।

पूर्व सीएम का ऑनलाइन ट्रांसफर ड्रीम प्रोजेक्ट विफल

खरखौदा। प्राइमरी अध्यापक वेलफेयर एसो के प्रदेश अध्यक्ष नरेन्द्र दहिया ने कहा कि प्रदेश के पूर्व मुख्य-मन्त्री मनोहर लाल का ड्रीम प्रोजेक्ट ऑनलाइन ट्रांसफर ड्राइव केवल सपना बनकर रह गया है। सरकार ने इसको हर वर्ष चलाने का सपना जिस जोश के साथ शुरू करने का वायदा हरियाणा के एक लाख शिक्षकों को दिखाया गया था। पूरा करने में सरकार नाकाम साबित हो रही है। शिक्षकों में सरकार की तबादला नीति से एक आस जगी थी कि अब हरियाणा में सिफारिश व खर्ची पर्ची के बल पर मन पसंद स्टेशन लेने का खेल खत्म हो जाएगा। परन्तु ये सपना नौ वर्षों से केवल सपना ही रह गया है। प्रदेश महासचिव ज्योति ने कहा कि ड्राइव न चलने से सबसे ज्यादा महिला शिक्षिकाओं को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।

खंड शिक्षा अधिकारियों ने किया निरीक्षण

निष्पक्ष परीक्षा देने के लिए विद्यार्थियों को किया प्रेरित

राजकीय स्कूलों में अर्धवार्षिक परीक्षाओं का दूसरा दिन शांतिपूर्वक संपन्न

अर्धवार्षिक परीक्षाओं का दूसरा दिन शांतिपूर्वक संपन्न

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड के दिशा-निर्देशों के तहत जिले के सभी राजकीय विद्यालयों में शनिवार को अर्धवार्षिक परीक्षाओं का दूसरा दिन शांतिपूर्वक संपन्न हुआ। कक्षा चौथी से 12वीं तक के कुल 85,315 विद्यार्थी इस परीक्षा में शामिल हुए। सुबह 9 से दोपहर 12 बजे तक आयोजित परीक्षाओं के दौरान सभी विद्यालयों में नकल रहित माहौल बनाए रखने के लिए विशेष निगरानी की गई। खंड शिक्षा अधिकारियों ने अपने-अपने ब्लॉकों के विद्यालयों का दौरा कर परीक्षा केंद्रों की व्यवस्था का निरीक्षण किया। अधिकारियों ने विद्यालय प्राचार्यों को नकल रोकथाम के लिए सख्त निर्देश दिए और विद्यार्थियों को निष्पक्ष परीक्षा देने के लिए प्रेरित किया।

सभी अधिकारियों को निर्देश

अर्धवार्षिक परीक्षाओं को लेकर विद्यालय शिक्षा निदेशालय की ओर से पहले ही शेड्यूल जारी कर दिया गया था। जिलास्तर पर प्रश्न पत्र प्रिंट करवाकर खंड शिक्षा अधिकारियों के माध्यम से सभी विद्यालयों में समय पर पहुंचाए गए। परीक्षाओं के बेहतर व नकल रहित संचालन के लिए सभी अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं। सभी विद्यार्थी परीक्षा को गंभीरता से लें, ताकि उनके शैक्षणिक स्तर का सही मूल्यांकन किया जा सकेगा। *नवीन गुलिया, जिला शिक्षा अधिकारी, सोनीपत*

परीक्षाएं आयोजित की

शनिवार को निदेशालय द्वारा निर्धारित शेड्यूल के अनुसार कक्षा चौथी व पांचवीं के विद्यार्थियों की हिंदी, कक्षा छठी की गणित, सातवीं की ड्राइंग, आठवीं की विज्ञान, नौवी की अंग्रेजी, 10वीं की संस्कृत, पंजाबी, उर्दू और संगीत विषय की परीक्षाएं ली गईं। इसी तरह 11वीं की समाजशास्त्र, व्यवसाय अध्ययन, रसायन विज्ञान तथा 12वीं की गणित, जीव विज्ञान और राजनीति विज्ञान की परीक्षाएं आयोजित की गईं।

6 तक चलेगी 11वीं व 12वीं की परीक्षाएं

शिक्षा विभाग के अनुसार, कक्षा चौथी व पांचवीं की परीक्षाएं 28 अक्तूबर तक, छठी से 10वीं की 31 अक्तूबर तक और 11वीं व 12वीं की परीक्षाएं 6 नवंबर तक जारी रहेंगी। परीक्षा समाप्त होने के बाद नियमित रूप से कक्षाएं प्रारंभ कर दी जाएंगी। विभाग ने बताया कि सभी विद्यालयों में परीक्षा व्यवस्था और प्रश्नपत्रों की गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए सभी तैयारियां पहले ही पूरी कर ली गई हैं।

ऑन द स्पॉट एडमिशन प्रारंभ

सोनीपत। जिले के औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (आईटीआई) में छह चरणों की प्रवेश प्रक्रिया पूरी होने के बाद भी कई सीटें खाली रह गई हैं। अब उन छात्रों के लिए एक और अवसर उपलब्ध कराया गया है जो अब तक दाखिले से वंचित रह गए थे। कौशल विकास एवं औद्योगिक प्रशिक्षण निदेशालय ने विद्यार्थियों की सुविधा को देखते हुए 27 अक्तूबर से ऑन द स्पॉट एडमिशन की प्रक्रिया शुरू करने की घोषणा की है। छात्र 27 अक्तूबर से ऑनलाइन पोर्टल पर आवेदन कर 28 अक्तूबर से 5 नवंबर तक संस्थान में प्रवेश ले सकेंगे। राठधना रोड स्थित राजकीय आईटीआई संस्थान में इस समय 308 सीटें रिक्त हैं। इस संस्थान में कुल 31 ट्रेड में 1044 सीटें निर्धारित की गई थीं, जिनमें से छह चरणों की प्रक्रिया के बाद केवल 736 सीटें ही भरी जा सकी हैं। अब शेष सीटों को भरने के लिए संस्थान ने पूरी तैयारी कर ली है। आवेदन केवल ऑनलाइन माध्यम से ही मान्य होंगे, बिना आवेदन दाखिला लेने वाले छात्रों का प्रवेश रद्द माना जाएगा। बनाया है हेल्प डेस्क संस्थान प्रबंधन ने बताया कि छात्रों को पहले आओ, पहले पाओ के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा। इसके लिए एक विशेष हेल्प डेस्क भी तैयार की गई है।

200 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में छात्रा नितिका दौड़ी सबसे तेज

बिचपड़ी के रावमावि में खंड मुंडलाना की खेल प्रतियोगिताएं

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गोहाना

गांव बिचपड़ी स्थित राजकीय वममवि में आयोजित शैक्षणिक खंड मुंडलाना की दो दिवसीय खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिताएं शनिवार को सम्पन्न हो गई। अध्यक्षता खंड शिक्षा अधिकारी रामकुमार पंघाल ने की। संयोजन मेजबान विद्यालय के प्राचार्य धर्मपाल दहिया का रहा। खेलों में खंड क्षेत्र के विभिन्न सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा दिखाई।

गोहाना। विजेता खिलाड़ी प्रसन्नचित मुद्रा में शिक्षकों के साथ। *फोटो :हरिभूमि*

ये रहे विजेता

खेलों में 200 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में राजकीय कन्या प्राथमिक पाठशाला की छात्रा नितिका प्रथम रही जबकि दून पब्लिक स्कूल मुंडलाना की तनवी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर दौड़ प्रतियोगिता में हैरिटेज इंटरनेशनल स्कूल गंगाना की छात्रा आरोही अव्वल रही। आदर्श माध्यमिक स्कूल मुंडलाना की छात्रा याचना ने द्वितीय स्थान हासिल किया। अंडर-11 आयु वर्ग की लड़कियों कबड्डी प्रतियोगिता में जनता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बुटाना की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जबकि राजकीय प्राथमिक पाठशाला जागसी की टीम द्वितीय स्थान पर रही। अंडर-11 आयु वर्ग की लड़कियों की खो-खो प्रतियोगिता में जनता वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय बुटाना की टीम ने प्रथम और राजकीय प्राथमिक पाठशाला ईशापुर खेड़ी की टीम ने द्वितीय स्थान हासिल किया।

खरखौदा। खिलाड़ियों का स्वागत करते प्राचार्या व प्राथमिक प्रभारी। *फोटो :हरिभूमि*

खो-खो टीमें जिला स्तर के लिए चयनित

खरखौदा। कल्पना चावला विद्यापीठ की अंडर-11 (लड़के व लड़कियों) खो-खो टीमों ने 24 व 25 अक्टूबर शुक्रवार और शनिवार को खंड स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर विद्यालय का नाम गौरवान्वित किया। इस शानदार उपलब्धि से पूरे विद्यालय परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई। इस प्रतियोगिता में दक्ष सुपुत्र मनोज ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए लंबी कूद में प्रथम स्थान हासिल किया तथा खुशी सुपुत्री कृष्ण ने 100 मीटर दौड़ में दूसरा स्थान प्राप्त किया और इन सभी विद्यार्थियो का चयन जिला स्तर के लिए हुआ। टीम की इस सफलता का श्रेय खेल प्रशिक्षक तरुण को जाता है, जिन्होंने अपने मार्गदर्शन, मेहनत और लगन से विद्यार्थियों को सफलता की राह दिखाई।

क्लास एक्टिविटी में छात्रों ने खेली गेम्स

सोनीपत। सरस्वती शिक्षा संस्थान सीनियर सेकेंडरी स्कूल सोनीपत (एस-7) में शनिवार को पीपी 2 और पीपी 3 कक्षाओं के लिए गेम्स से सम्बंधित एक क्लास एक्टिविटी आयोजित की गई। इस गतिविधि का उद्देश्य छात्रों में टीम भावना, सहयोग, आत्मविश्वास, अनुशासन और शारीरिक विकास को बढ़ावा देना था। छात्रों ने विभिन्न रोचक खेलों में भाग लिया, जैसे फन गेम्स, बॉल गेम, मैथ्स गेम्स, एजुकेशनल गेम्स और कंप्यूटर गेम्स आदि। सभी छात्रों ने बहुत उत्साह और खुशी के साथ भाग लिया और एक-दूसरे को प्रोत्साहित किया। शिक्षकों ने छात्रों का उत्साह बढ़ाया और उन्हें ईमानदारी, खेल भावना और मिलजुलकर खेलने के महत्व के बारे में बताया। यह एक्टिविटी छात्रों के लिए एक सीखने और आनंद लेने का सुंदर अनुभव रही।

अभियान चलाकर उठाए कूड़े के ढेर

मेयर की अगुवाई में शुरू किया अभियान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

स्वच्छता अभियान के तहत ड्रेन नंबर 6 के ऊपर मुरथल रोड, आदर्श नगर तथा बस स्टैंड के निकट पड़े कूड़े को उठवाया। इन स्थानों पर प्राइवेट सफाई कर्मी तथा आसपास के दुकानदारों ने कूड़े के ढेर लगा रखे थे। कूड़ा बहकर ड्रेन 6 नंबर में जा रहा था। मेयर राजीव जैन के नेतृत्व में प्रत्येक शनिवार स्वच्छ, स्वस्थ एवं सुंदर सोनीपत संकल्प के साथ चलाए जा रहे अभियान एक सिरे से सफाई करवाई जाती है। राजीव जैन ने बताया कि स्वच्छता को ध्यान में रखते मुख्य मार्गों पर सफाई मित्रों की भी ड्यूटी लगाई है।

सोनीपत। सफाई अभियान के दौरान कूड़ा उठवाते मेयर राजीव जैन। *फोटो :हरिभूमि*

सुंदर चित्रकारी करवाई

सफाई के काम की लगातार निगरानी करते हैं। राजीव जैन ने बताया कि स्वच्छता के साथ साथ शहर को सुंदर बनाने के लिए शनि मंदिर के साथ कूड़ा डालना बंद करवाकर सुंदर चारदीवारी का निर्माण करने के बाद चित्रकारी करवाई गई है और इसी तरह सिक्का कॉलोनी के पास मैन रोड पर कूड़ा डालना बंद करवाया है और वंहा पर भी सुंदर स्थान बनवाया जायेगा। उन्होंने बताया कि दिल्ली रोड तथा बावा तराना सिनेमा रोड पर ड्रेन नंबर 6 के जर्जर हो चुके पुलों की ग्रिल को भी नए सिरे से लगाया जायेगा।राजीव जैन ने कहा कि ड्रेन नंबर 6 के मुरथल रोड, सिक्का कॉलोनी, आई टी आई चौक तथा आदर्श नगर सिथत पुलों के पास अधूरा पड़ा कार्य भी जल्द पूरा करवाया जायेगा। उन्होंने अधिकारियों को बंद ड्रेन की सफाई भी कैसे हो इसके उपायों पर भी विचार करने के निर्देश दिए हैं।

जाम की समस्या से वाहन चालक परेशान

पुलिस कर्मियों की तैनाती संख्या बढ़ाने की मांग रखी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

खबडू रोड स्थित रेलवे फ्लाईओवर पर हर दिन सुबह और दोपहर के समय जाम की स्थिति बनी रहती है, जिससे राहगीरों और वाहन चालकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जाम की सबसे ज्यादा समस्या स्कूलों की छुट्टी और कार्यालयों के समय में होती है। जब बड़ी संख्या में वाहन एक साथ सड़क पर निकलते हैं। स्थानीय निवासियों और वाहन चालक सुरेश ,रणबीर, विकास, महेंद्र का कहना है कि सुबह के समय जब बच्चे स्कूल जाते हैं और दोपहर को छुट्टी के समय जब वे लौटते हैं।

गन्नौर। खबडू रोड पर दोनों तरफ लगा वाहनों का जाम, लगी हुई लंबी लाइन।

वाहनों की लंबी कतारें

तब फ्लाईओवर पर वाहनों की लंबी कतारें लग जाती हैं। कई बार तो जाम इतना गंभीर हो जाता है कि लोगों को 10 से 15 मिनट सेबी अधिक का समय लग जाता है। इससे न केवल छात्रों और अभिभावकों को परेशानी होती है। वाहन चालकों ने प्रशासन से मांग की है कि फ्लाईओवर पर सुबह और दोपहर के समय ट्रैफिक पुलिस कर्मियों की स्थायी ड्यूटी व संख्या बढ़ाई जाए । ताकि यातायात व्यवस्था सुचारू बनी रहे। स्थानीय लोगों का कहना है कि फ्लाईओवर का मार्ग संकरा है और दोनों ओर से वाहन एक साथ आने के कारण स्थिति और बिगड़ जाती है। कई बार छोटे वाहन, स्कूल बसें और ट्रैक्टर-ट्रॉली एक साथ फंस जाते हैं, जिससे पूरे मार्ग पर अव्यवस्था फैल जाती है।

तैनाती बढ़ाएंगे

इस विषय पर जब गन्नौर थाना प्रभारी धीरज से बात की गई तो उन्होंने बताया कि "फ्लाईओवर पर यातायात व्यवस्था बनाए रखने के लिए पुलिस कर्मियों की ड्यूटी पहले से लगाई गई है। फिर भी यदि किसी समय जाम की स्थिति उत्पन्न होती है, तो हम अतिरिक्त पुलिस कर्मियों की तैनाती करेंगे, ताकि आमजन को परेशानी का सामना न करना पड़े। स्कूल समय के अनुसार पुलिस कर्मियों की ड्यूटी का पुनः निर्धारण किया जाएगा और आवश्यकतानुसार ट्रैफिक नियंत्रण व्यवस्था को मजबूत किया जाएगा।

बलि की भक्ति से प्रसन्न हो भगवान ने पाताल लोक का राजा बनाया

खरखौदा। बुच्चेश्वर मंदिर में चल रही भागवत कथा के चौथे दिन कथा वाचक डॉ विष्णु दत्त बिरधाना ने बताया कि सूर्यवंश में इक्ष्वाकु के वंशजों में कई महान राजा हुए। उनमें राजा दिलीप, राजा मांधाता, राजा रघु, और आगे चलकर भगवान श्रीराम हुए। रघु के कारण इस वंश को रघुवंश कहा गया। इन राजाओं का जीवन धर्म, दया और त्याग का प्रतीक है। उन्होंने राजा रघु की कथा का जिक्र करते बताया कि राजा रघु अपनी सत्यप्रतिज्ञा और दानशीलता के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने अश्वमेध यज्ञ किया, जिससे देवगण प्रसन्न हुए। राजा अम्बरीष और दुर्वासा ऋषि की कथा के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि राजा अम्बरीष भगवान विष्णु के अनन्य भक्त थे। एक बार वे एकादशी व्रत कर रहे थे। व्रत का पालन करने के समय ऋषि दुर्वासा आए। राजा ने ऋषि के आने का सम्मान किया, परंतु समय निकलने पर उन्होंने व्रत पूर्ण करने के लिए केवल तुलसी जल ग्रहण किया।

खरखौदा। भागवत कथा श्रवण करते श्रद्धालु। *फोटो :हरिभूमि*

गोहाना। विजेता खिलाड़ियों को आशीर्वाद देते शिक्षक। *फोटो : हरिभूमि*

खेल प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों ने दिखाई प्रतिभा

गोहाना। शैक्षणिक खंड गोहाना की खेल प्रतियोगिताओं में बाल खिलाड़ियों ने अपनी खेल प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इन खेलों में कक्षा तीसरी से कक्षा 5वीं तक के विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। खेलों के नोडल अधिकारी प्राचार्य सतेंद्र दहिया रहे। संयोजक प्राचार्य राजेश दूहन और अनिता दूहन थे। शनिवार को विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया गया। खंड स्तरीय खेलों में लड़कियों की खेल प्रतियोगिताओं में 400 मीटर रिले दौड़ में अनुया, पीहू, निधि और अवनी की टीम प्रथम रही। खुशी, मानवी, पावनी और उरवी की टीम द्वितीय जबकि यशिका, भारती, किरण और रितिका की टीम तृतीय स्थान पर रही। 400 मीटर दौड़ में गुंजन ने प्रथम, अनुया ने द्वितीय और वंशिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर दौड़ में गुंजन, पीहू और प्रियांशी क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान पर रहे। 100 मीटर दौड़ में पावनी ने प्रथम, वंशिका ने द्वितीय और जानवी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

विधायक ने किया रोहणा में प्राकृतिक खेती का शुभारंभ

खरखौदा। गाँव रोहणा के राजपाल दहिया नम्बरदार के खेत पर प्राकृतिक तरीके से गेहूँ की बिजाई कर प्राकृतिक कृषि की शुरुआत की गई। पवन खरखौदा ने स्वयं ट्रैक्टर चलाकर बीजामृत से बीज उपचार करवा कर गेहूँ की बिजाई की। गांव रोहणा व आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में पहुंचे किसानों ने प्राकृतिक कृषि का प्रशिक्षण भी लिया। विधायक खरखौदा ने किसानों को सम्बोधित करते कहा कि खेती में रासायनिक खादों और कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग ने खाद्यान्न को जहरीला बना दिया है, जमीन को बंजर कर दिया है। कैंसर, हृदयघात जैसी जानलेवा बीमारियां बढ़ रही हैं। पर्यावरण बुरी तरह प्रदूषित हो रहा है। अब बगैर रसायनों के जहरमुक्त प्राकृतिक खेती करना अनिवार्य हो गया है। सरकार द्वारा प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। देशी गाय खरीदने के लिए 30,000 अनुदान, किसान को निःशुल्क प्रशिक्षण, प्रदर्शनी प्लाट पर 4000/- रुपये प्रति एकड़ जैसी सुविधाएं दी जा रही।

खरखौदा। प्राकृतिक खेती के श्रीगणेश की औपचारिक घोषणा करते विधायक।

ठेका सफाई कर्मचारियों का धरना 24वें दिन भी जारी

एक नवंबर से भूख हड़ताल का ऐलान

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

ठेका सफाई कर्मचारी एकता मंच संबंधित मूलनिवासी कर्मचारी कल्याण महासंघ सहयोग बली सेना यूनियन का नगर निगम में 24 वें दिन भी धरना जारी रहा। धरने की अध्यक्षता प्रधान मुकेश टांक ने की और संचालन प्रदेश कार्यकारणी सदस्य मुकेश कर्मा ने किया। उन्होंने कहा कि आज धरने को 24 दिन हो गये हैं शासन व प्रसासन कोई भी सुध नहीं ले रहा हैं। आज भी कर्मचारियों की छंटनी की जा रही और उनको बदले की भावना से नोकरी से हटाया जा रहा है और समय पर वेतन नहीं दिया जा रहा हैं। अगर ऐसे ही चलता रहा तो 1 नवंबर को हटाए हुए कर्मचारी कार्मिक भूख हड़ताल पर चले जाएंगे। जिसकी पूर्ण रूप जिमेवारी शासन व प्रसासन की होगी। आज धरने पर रविंदर, अनिल, सावन कुमार, कश्मीरी, टेकराम, सोमी, इंदरजीत, सुमित, सुनीता, माया, सुषमा, अंजू, निशा आदि मौजूद रहे।

ग्राम पंचायत बिन्धरोली, राई (सोनीपत)

नीलामी सूचना

आप सभी आमजन को सूचित किया जाता है कि ग्राम पंचायत बिन्धरोली खंड राई, जिला सोनीपत अपने गांव बिन्धरोली की शिव चौक वाली चौपाल के कंडम सामान की खुली बोली दिनांक 29.10.2025 को गांव की सामान्य चौपाल में प्रातः 10:00 बजे करवाना चाहती है तथा बोली की शर्तें मौके पर सुना दी जाएंगी। इच्छुक व्यक्ति निश्चित समय व स्थान पर पहुंचे।

हस्ता/-सरपंच
ग्राम पंचायत बिन्धरोली
ब्लॉक राई (सोनीपत)

सुविधा अंतरराष्ट्रीय समागम : संगत के लिए रेलवे ने बढ़ाई सुविधाएं

गांव भोड़वाल माजरी के पास 31 अक्तूबर से 3 नवंबर तक आयोजन होगा

संत निरंकारी समागम के लिए रेलवे का तोहफा कोटा से पानीपत के बीच स्पेशल ट्रेन चलेगी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

अंतरराष्ट्रीय संत निरंकारी समागम के अवसर पर उत्तर रेलवे ने श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए खास इंतजाम किए हैं। समागम के शुभारंभ और समापन के दिनों में यानी 30 अक्तूबर और 4 नवंबर को राजस्थान के कोटा से सोनीपत होते पानीपत तक स्पेशल ट्रेन का संचालन किया जाएगा। इस ट्रेन का ठहराव मार्ग में 10 प्रमुख स्टेशनों पर ही रहेगा, जिससे समागम में आने वाली संगत के साथ-साथ अन्य यात्रियों को भी राहत मिलेगी।

आवागमन में सुविधा मिलेगी

रेलवे ने ट्रेनों में बढ़ने वाली भीड़ व निरंकारी संत समागम को लेकर स्पेशल ट्रेन के परिचालन का निर्णय लिया है। स्पेशल ट्रेन के परिचालन से संगत व यात्रियों को आवागमन में सुविधा मिलेगी। ट्रेन का मार्ग में 10 प्रमुख स्टेशनों पर दो मिनट का ठहराव रहेगा। *हिमांशु शेखर उपाध्याय, मुख्य जनसंपर्क अधिकारी, उत्तर रेलवे*

सहायता केंद्र लगाए जाएंगे

78वां अंतरराष्ट्रीय संत निरंकारी समागम सोनीपत के गांव भोड़वाल माजरी के पास 31 अक्तूबर से 3 नवंबर तक आयोजित किया जा रहा है। देश ही नहीं, बल्कि विदेशों से भी हजारों श्रद्धालु इस भव्य समागम में हिस्सा लेने पहुंचेंगे। आयोजन स्थल पर तैयारियां जोरों पर हैं। हरियाणा, दिल्ली, पंजाब और उत्तर प्रदेश के साथ-साथ कई अन्य राज्यों की संगत दिन-रात तैयारी में जुटी है। रेलवे अधिकारियों के अनुसार, यात्रा के दौरान सुरक्षा, सफाई और सुविधा को लेकर विशेष प्रबंध किए गए हैं। समागम के दिनों में अतिरिक्त स्टाफ और सहायता केंद्र भी लगाए जाएंगे ताकि असुविधा न हो।

इन स्टेशनों पर होगा ठहराव

सामान्य बोगी वाली स्पेशल ट्रेन संख्या 09801 कोटा से दोनों दिन सुबह 6:25 बजे अपनी यात्रा प्रारंभ कर दोपहर 3:32 बजे सोनीपत के रास्ते 4:40 बजे पानीपत स्टेशन पर पहुंचेगी। वहीं ट्रेन संख्या 09802 का पानीपत स्टेशन से रात 9:15 बजे यात्रा प्रारंभ कर 10:00 बजे सोनीपत के रास्ते अगले दिन सुबह 7:30 बजे कोटा स्टेशन पर यात्रा संपन्न करेगी। मार्ग में दोनों ट्रेनों का लखेरी स्टेशन, सवाई माधोपुर जंक्शन, गंगापुर सिटी, हिंडौन सिटी, बयाना, भरतपुर, मथुरा जंक्शन, नई दिल्ली स्टेशन, सोनीपत व भोड़वाल माजरी स्टेशन पर ठहराव रहेगा।

34 जोड़ी एक्सप्रेस ट्रेनों का अस्थायी ठहराव

रेलवे की ओर से समागम के दौरान आने-जाने वाली संगत की सुविधा को ध्यान में रखते हुए 6 अक्तूबर से 7 नवंबर तक भोड़वाल माजरी रेलवे स्टेशन पर 34 जोड़ी एक्सप्रेस ट्रेनों का अस्थायी ठहराव किया गया है। इनमें आम्रपाली एक्सप्रेस, गीता जयंती एक्सप्रेस, जनशताब्दी, जम्मू मेल, संभलपुर और जम्मूतवी एक्सप्रेस जैसी प्रमुख ट्रेनें शामिल हैं। इसके बावजूद बढ़ती भीड़ और यात्रियों की सुविधा को देखते हुए रेलवे ने 30 अक्तूबर और 4 नवंबर को दो विशेष ट्रेनों का संचालन करने का निर्णय लिया है। ये ट्रेनें कोटा से चलकर सोनीपत, मुरथल, गन्नौर होते हुए पानीपत तक पहुंचेंगी।

सोनीपत। प्रभातफेरी के दौरान महिला मंडली एवं अन्य। *फोटो :हरिभूमि*

दो नवंबर को होगा तुलसी-शालिग्राम विवाह

सोनीपत। मंदिर श्री ठाकुर द्वारा कल्याण नगर की महिला मंडली ने कार्तिक माह के शुक्ल पक्ष की विनायक चतुर्थी से प्रभातफेरियों का शुभारंभ किया। प्रधान पवन तनेजा ने तुलसी पूजा-अर्चना व ध्वजारोहण कर कार्यक्रम की शुरुआत की। पवन ने बताया कि मंदिर श्री ठाकुर द्वारा से 2 नवंबर को देव उठायनी एकादशी के दिन शालिग्राम की बारात निकाली जाएगी तुलसी शालिग्राम का विवाह पूरे विधि-विधान से किया जाएगा।

सार्वजनिक सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि प्रधान सचिव हरियाणा सरकार विकास एवं पंचायत विभाग, हरियाणा, चण्डीगढ़ के पत्र क्रमांक 81-SBM(G) MEC-B-2018/23796 दिनांक 09.04.2018 के आदेशानुसार वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर ग्राम पंचायत कथूरा में एक रिक्त पद (सफाई कर्मचारी की मृत्यु होने के उपरान्त) पर सफाई कर्मचारी की नियुक्ति की जानी है। जिसके लिए दिनांक 25.10.2025 से दिनांक 29.10.2025 शाम 5:00 बजे तक खण्ड कार्यालय कथूरा में आवेदन पत्र लिये जाएंगे तथा सफाई कर्मचारी की नियुक्ति हेतु दिनांक 30.10.2025 को प्रातः 10:00 बजे चयनित कमेटी द्वारा साक्षात्कार खण्ड कार्यालय कथूरा में लिया जायेगा। उक्त पद के लिए निम्नलिखित योग्यताएं वांछित हैं।

1. गांव का स्थाई निवासी हो।
2. आवेदक की आयु 18 से 55 के बीच हो।
3. आवेदक शारीरिक रूप से स्वस्थ एवं कार्य करने में सक्षम हो।

आदेशानुसार,
खण्ड विकास एवं पंचायत अधिकारी, कथूरा

खबर संक्षेप

शिव मंदिर के स्थापना दिवस पर हवन व पूजा

गोहाना। शनिवार को शहर के उतम नगर में धर्मशाला वाली गली के पास स्थित शिव मंदिर का 7वां स्थापना दिवस मनाया गया। समारोह में श्रद्धालुओं ने हवन में मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियां डाली और भगवान शिव की पूजा-अर्चना करके मन्नतें मांगी। सेन धर्मशाला के पूर्व अध्यक्ष सोमपाल सेन व आजाद से की देखरेख में 6 वर्ष पूर्व इस शिव मंदिर का निर्माण करवाया गया था। पूरे उतम नगर में यह एकमात्र शिव मंदिर है जिसमें भक्तों की भीड़ लगी रहती है। शनिवार को मंदिर के स्थापना दिवस पर हवन करवाया गया। हवन मंदिर के पुजारी सोनू शांडिल्य ने करवाया जिसमें श्रद्धालुओं ने मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियां डाली। मुख्य यज्ञमान विजय चौहान व उनकी अर्धांगिनी सुमन देवी रहे। हवन में सोमपाल सेन, शेर सिंह बेडवाल, सुभाष भट्टी, बबलू प्रधान, आजाद, सरोज, सतीश भण्डेरी, कुलदीप शर्मा, सुरेश गुप्ता व कृष्ण फरमाणा सहित विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों ने हवन में आहुतियां डाली।

एक्यूआई में मामूली गिरावट से राहत नहीं

सोनीपत। जिले में वायु प्रदूषण का स्तर लगातार लोगों के लिए चिंता का विषय बना हुआ है। शनिवार को वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) में मामूली गिरावट जरूर दर्ज की गई, लेकिन हवा की गुणवत्ता अब भी 'खराब' श्रेणी में बनी हुई है। शुक्रवार को जिले का एक्यूआई 220 दर्ज किया गया था, जो शनिवार को घटकर 214 पर आ गया। हालांकि यह गिरावट आंशिक राहत के रूप में देखी जा रही है, लेकिन स्वास्थ्य विशेषज्ञों का कहना है कि यह स्तर अभी भी खतरनाक सीमा के करीब है। लगातार खराब होती हवा से सांस और दमा के मरीजों की परेशानी बढ़ गई है। जिले के सरकारी और निजी अस्पतालों में रोजाना ऐसे मरीजों की संख्या में इजाफा देखा जा रहा है। चिकित्सकों के अनुसार, प्रदूषण के कारण सांस की तकलीफ, गले में खराश, आंखों में जलन और खांसी जैसी शिकायतें बढ़ रही हैं। बुजुर्गों और बच्चों को इससे सबसे अधिक दिक्कत हो रही है।

किसानों को नहीं मिल रहे धान के उचित दाम : शर्मा

गोहाना। सीपीआइएम (माकपा) के जिला सचिव आनंद शर्मा ने कहा कि गोहाना की अनाज मंडी में किसानों को धान के उचित दाम नहीं मिल रहे हैं। सरकार द्वारा कहने को पीआर धान पर एमएसपी निर्धारित किया गया है लेकिन मंडी में इस भाव पर खरीद नहीं की जा रही है। शर्मा शनिवार को अपने साथियों के साथ मंडी का दौरा कर रहे थे। किसानों को कृति लागत के हिसाब से बासमती धान के उचित भाव नहीं मिल रहे हैं, जिससे किसान परेशान है।

घाटों पर उमड़ी श्रद्धालुओं की भीड़, मंगलवार को उगते सूर्य को अर्घ्य के साथ होगा समापन

नहाय खाय के साथ, आस्था और सूर्य उपासना का महापर्व छठ हुआ शुरू

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

सूर्य उपासना और छठी मैया की आराधना का चार दिवसीय महापर्व छठ शनिवार से श्रद्धा और भक्ति के साथ शुरू हो गया। सुबह से ही यमुना नदी के तटों और शहर के विभिन्न घाटों पर श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। व्रती महिलाओं ने पवित्र स्नान कर व्रत की शुरुआत की और परिवार की सुख-समृद्धि की कामना की। नगर निगम ने घाटों पर सफाई और सुरक्षा के विशेष इंतजाम किए हैं ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो।

पहले दिन 'नहाय-खाय' के रूप में मनाए जाने वाले इस पर्व में महिलाएं और पुरुष पवित्र जल से स्नान कर व्रत की शुरुआत करते हैं। इसके बाद प्रसाद के रूप में शुद्ध भोजन ग्रहण किया जाता है। शाम के समय श्रद्धालु महिलाएं घाटों पर पहुंचकर डूबते सूर्य को पहला अर्घ्य देंगी। वहीं, पर्व का समापन मंगलवार सुबह उगते सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर किया जाएगा।

छठ पर्व उत्तर भारत के कई राज्यों, विशेषकर बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश और हरियाणा में आस्था और भक्ति का प्रतीक माना जाता है। इसे सूर्य षष्ठी, डाला छठ और छठी मैया के नाम से भी जाना जाता है। यह पर्व 36 घंटे के निर्जला व्रत के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें व्रती ढलते और उगते सूर्य को जल अर्पित कर धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।

डा. मनमोहन मिश्रा ने बताया कि छठ पर्व का प्रत्येक दिन विशेष धार्मिक महत्व रखता है। पहले दिन नहाय-खाय के बाद दूसरे दिन खरना मनाया जाएगा, जिसमें व्रती निर्जला उपवास रखते हुए शाम को गुड़ की खीर और घी की रोटी का प्रसाद ग्रहण करेंगे। इसके बाद व्रती अगले दिन तक अन्न और जल का त्याग करते हैं। तीसरे दिन संध्या अर्घ्य का आयोजन होगा, जब श्रद्धालु महिलाएं घाटों पर सूर्यास्त के समय डूबते सूर्य को अर्घ्य देंगी। चौथे दिन ऊषा अर्घ्य के अवसर पर व्रती उगते सूर्य को अर्घ्य अर्पित कर व्रत का समापन करेंगी।

घाटों की साफ सफाई के किए विशेष प्रबंधक

नगर निगम और जिला प्रशासन ने घाटों पर साफ-सफाई, प्रकाश व्यवस्था और सुरक्षा के लिए विशेष प्रबंध किए हैं। प्रशासन ने श्रद्धालुओं से अपील की है कि वे श्रद्धा और संयम के साथ पर्व मनाएं तथा जल प्रदूषण से बचने के लिए प्लास्टिक सामग्री का उपयोग न करें। घाटों पर आस्था और भक्ति का माहौल बना हुआ है।

छठ महापर्व : 2 लाख रुपये की लागत से बनेगा घाट

गोहाना। छठ महापर्व पर श्रद्धालुओं की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए आदर्श नगर की गली नंबर 3 के अंतिम छोर पर छठ पूजा घाट का निर्माण करवाया जा रहा है। घाट के निर्माण पर 2 लाख रुपये खर्च होंगे। इस घाट पर श्रद्धालु स्नान कर सकेंगे। शनिवार को नगर परिषद (नप) की चेयरपर्सन रजनी विरमानी छठ पूजा घाट का निरीक्षण किया।

चेयरपर्सन रजनी विरमानी ने छठ महापर्व से पहले छठ पूजा घाट का निर्माण पूरा करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि घाट पर सफाई और प्रकाश व्यवस्था प्रबंध समय पर पूर्ण किए जाएं ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। उन्होंने कहा कि छठ महापर्व हमारी आस्था, संस्कृति और प्रकृति संरक्षण का प्रतीक है। इसलिए नगर परिषद का दायित्व है कि श्रद्धालुओं को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराया जाए। इस अवसर पर वार्ड के पार्षद मुकेश देवगन, कार्यकारी अभियंता राहुल पूनिया और जेई अजय उपस्थित रहे।

गन्नौर। फेस्टिवल कप सीजन-4" का फाइनल मुकाबला की विजेता टीम को सम्मानित करते मुख्य अतिथि ।

यूनिक क्रिकेट टीम ने फेस्टिवल कप सीजन-4 पर जमाया कब्जा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

- गन्नौर लीजेंड्स को 7 विकेट से हराया

यूनिक क्रिकेट स्टेडियम, शेखपुरा (गन्नौर) में फेस्टिवल कप सीजन-4" का फाइनल मुकाबला के फाइनल मैच में यूनिक क्रिकेट स्टेडियम टीम, गन्नौर ने शानदार प्रदर्शन करते हुए गन्नौर लीजेंड्स टीम को 7 विकेट से हराकर विजेता ट्रॉफी अपने नाम कर ली।

फाइनल मुकाबले में गन्नौर लीजेंड्स टीम के कप्तान दिनेश धनखड़ ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया। टीम ने ललित त्यागी (55 रन, 29 गेंद) और अनिकेत धनखड़ (42 रन, 29 गेंद) की शानदार पारियों की बदौलत निर्धारित ओवरों में 174 रन का मजबूत लक्ष्य खड़ा किया। यूनिक टीम के गेंदबाज रवींद्र मास्टर ने घातक गेंदबाजी करते हुए मात्र 18 रन देकर 4 विकेट झटके और विपक्षी बल्लेबाजी क्रम को झकझोर दिया। लक्ष्य का पीछा करते हुए यूनिक क्रिकेट स्टेडियम टीम ने शानदार शुरुआत की। टीम के सलामी बल्लेबाज सतपाल सैनी ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 66 रन (39 गेंद) बनाए, वहीं रवींद्र मास्टर ने अपनी सर्वश्रेष्ठ ऑलराउंड क्षमता दिखाते हुए नाबाद 50 रन (39 गेंद) जोड़े। मोनू त्यागी ने भी नाबाद 28 रन बनाकर टीम को 14 गेंद शेष रहते जीत दिला दी। जितेन्द्र कौशिक ने 2 और हरपाल मलिक ने 1 विकेट अपने नाम किया। पूरी श्रृंखला में ललित त्यागी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 179 रन बनाए और उन्हें बेस्ट बैट्समैन ऑफ द सीरीज चुना गया। अनिल मोंगिया 171 रनों के साथ दूसरे स्थान पर रहे। अपनी शानदार गेंदबाजी और बल्लेबाजी के दम पर रवींद्र मास्टर को मैन ऑफ द मैच और मैन ऑफ द सीरीज दोनों का पुरस्कार मिला। अजय गोयल को बेस्ट बॉलर ऑफ द सीरीज, जबकि अजय डीपी और विजय राणा को बेस्ट फील्डर घोषित किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह में अजय गोयल और दीपक मलिक वकील ने विजेता टीम के कप्तान दीपक गोयल को ट्रॉफी प्रदान की।

दस्तावेजों की कमी लाडो लक्ष्मी पर पड़ रही भारी

- दीनदयाल लाडो लक्ष्मी योजना में अड़चन : 70 फीसदी से ज्यादा महिलाओं के दस्तावेज अधूरे, पंजीकरण में आ रही दिक्कत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| सोनीपत

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए शुरू की गई हरियाणा सरकार की दीनदयाल लाडो लक्ष्मी योजना जिले में दस्तावेजों की कमी के कारण अटकती नजर आ रही है। जिले की करीब 70 फीसदी महिलाएं पात्र होने के बावजूद योजना में पंजीकरण नहीं करा पा रही हैं क्योंकि उनके आवश्यक दस्तावेज अधूरे हैं। प्रशासन की ओर से ग्राम सचिवों और पटवारियों को गांव-गांव भेजा गया है ताकि पात्र महिलाओं से संपर्क कर उनका पंजीकरण करवाया जा सके, लेकिन अधूरे कागजात के चलते यह प्रक्रिया धीमी पड़ गई है।

मुख्यालय से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, जिले में इस योजना के लिए कुल 44,533 महिलाएं पात्र हैं। सरकार की सूची के अनुसार, ग्राम सचिव और पटवारी गांवों में जाकर महिलाओं से संपर्क कर रहे हैं और दस्तावेजों की जांच कर रहे हैं। जांच के दौरान पाया गया कि अधिकांश महिलाओं के पास जरूरी दस्तावेज नहीं हैं, जिसके कारण उनका पंजीकरण नहीं हो पा रहा है। प्रशासन के मुताबिक अब तक केवल करीब 5,000 महिलाओं का ही पंजीकरण पूरा हो सका है। प्रशासनिक अधिकारियों ने बताया कि जिन महिलाओं के दस्तावेज अधूरे हैं, उन्हें जल्द से जल्द कागजात पूरे करने की सलाह दी जा रही है। ग्राम सचिव और पटवारी घर-घर जाकर पात्र महिलाओं को योजना से जुड़ी जानकारी दे रहे हैं ताकि वे दस्तावेज पूरे कर पंजीकरण करा सकें।

सबसे बड़ी कमी रिहायशी प्रमाण पत्र की

दस्तावेजों में सबसे बड़ी कमी रिहायशी प्रमाणपत्र की पाई गई है। कई महिलाओं के पास यह प्रमाणपत्र नहीं है, जिससे वे अपनी निवास पहचान साबित नहीं कर पा रही हैं। इसके अलावा, जिन महिलाओं के माता-पिता का निधन हो चुका है, उनके पास मृत्यु प्रमाणपत्र भी नहीं है। वहीं, कई मामलों में आधार कार्ड और बैंक खाते में नामों में असमानता पाई गई है, जिससे तकनीकी बाधाएं उत्पन्न हो रही हैं।

राजकीय उच्च विद्यालय में चोरों ने लगाई सेंध

गोहाना। गांव मिर्जापुर खेड़ी स्थित राजकीय उच्च विद्यालय में चोरों ने सेंध लगा दी। चोर तोड़ कर बैट्री, सीपीयू व अन्य सामान चोरी कर ले गए। मुख्याध्यापक जितेंद्र की शिकायत पर बरोदा थाना में केस दर्ज किया गया। स्कूल में गुरुवार रात को चोरी की गई। चोरों ने मुख्य दरवाजे व अन्य कमरों के कई ताले तोड़े। अगले दिन स्टाफ सदस्य स्कूल पहुंचे तो चोरी का पता चला। चोर कम्प्यूटर लैब से 14 बैट्री, एक सीपीयू, माउस, कीपैड चोरी चोरी कर ले गए। लिपिक कक्ष में अलमारियों में रखे दस्तावेजों से भी छेडख़ानी की गई।

आज सिसाना गांव पहुंचेगी कुशाल दहिया बलिदान स्मृति यात्रा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| खरखौदा

अमर बलिदानी चौधरी कुशाल सिंह दहिया के 350 वें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में आगामी 14 नवंबर को बढ़खालसा गांव में राज्य स्तरीय समारोह का आयोजन किया जाएगा। जिसमें प्रदेशभर से श्रद्धालु और समाज के विभिन्न वर्गों के लोग शामिल होंगे। समारोह की तैयारी को लेकर बलिदान स्मृति यात्रा निकाली जा रही है, जो रविवार को सिसाना गांव स्थित दहिया खाप के चबूतरे पर पहुंचेगी और लोगों को कार्यक्रम में शामिल होने का न्योता देगी। यह जानकारी देते हुए डॉ. अनिल दहिया ने कहा कि भारत की धरती सदा से उन वीरों की जन्मभूमि रही है जिन्होंने धर्म, सत्य और मानवता की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी। इन्हीं में से एक हैं सोनीपत जिले के बढ़खालसा (गढ़ी दहिया) गांव के वीर बलिदानी चौधरी कुशाल सिंह दहिया, जिन्होंने 17 वीं सदी में गुरु तेग बहादुर जी के पवित्र शीश की रक्षा के लिए अपना शीश अर्पित कर इतिहास में अमर स्थान प्राप्त किया। 24 नवंबर 1675 को दिल्ली के चांदनी चौक में मुगल औरंगजेब के आदेश पर गुरु तेग बहादुर जी का शीश कलम कर दिया गया था। उनके परम शिष्य भाई जैता जी गुरु जी का पवित्र शीश लेकर आनंदपुर साहिब की ओर बढ़ रहे थे, परंतु मुगल सैनिक उनके पीछे लगे हुए थे। रास्ते में वे गढ़ी कुशाली (बढ़खालसा) गांव पहुंचे, जहां चौधरी कुशाल सिंह दहिया ने धर्म की रक्षा के लिए अपना शीश अर्पित कर अद्वितीय बलिदान दिया। उनका चेहरा गुरु तेग बहादुर जी से काफी मिलता-जुलता था, इसलिए उन्होंने कहा कि यदि मेरा शीश गुरु जी के स्थान पर दिया जाए तो मुगल सेना भ्रमित हो जाएगी और गुरु जी का शीश सुरक्षित आनंदपुर साहिब पहुंच जाएगा। इस असाधारण त्याग ने भारतीय इतिहास में धर्म, मानवता और वीरता की अमर मिसाल कायम की।

आठवें वेतन आयोग का शीघ्र गठन करे सरकार : अशोक

गोहाना। आल हरियाणा परिवहन कर्मचारी संघ के प्रदेश अध्यक्ष अशोक खोखर ने 8वें वेतन आयोग के गठन में देरी पर नाराजगी जताई। प्रदेश अध्यक्ष ने सरकार से आयोग के शीघ्र गठन की मांग की है ताकि कर्मचारियों को समय पर इसका लाभ मिल सके। अशोक खोखर ने कहा कि 1 जनवरी 2026 से 8वें वेतन आयोग की रिपोर्ट लागू होनी है। अब तक सरकार द्वारा आयोग के चेयरमैन और सदस्यों की घोषणा नहीं की गई है। ऐसे में जितनी देरी से आयोग का गठन होगा इसकी रिपोर्ट भी देरी से लागू होगी और कर्मचारियों समय पर इसका लाभ नहीं मिल सकेगा। संघ के राज्य महासचिव प्रताप भनवाला ने कहा कि आयोग गठन गठन के बाद एक से डेढ़ वर्ष रिपोर्ट तैयार करने में लग सकता है। ऐसे में सरकार समय पर इसके गठन की घोषणा करे।

धार्मिक स्थल बाबा देवता पर लगा भंडारा

गन्नौर। नगरपालिका रोड स्थित धार्मिक स्थल बाबा देवता पर सामूहिक भंडारे का आयोजन किया गया। भंडारे से पहले हवन यज्ञ किया गया। जिसमें मुख्य यजमान के तौर पर हरिप्रकाश शर्मा व उनकी धर्मपत्नी ने आहूति डाली। मंगलू शर्मा ने बताया कि मुदगल परिवार के बाबा देवता में काफी लोगों की आस्था है। उन्होंने कहा कि जो भी यहां सच्ची श्रद्धा के साथ अपनी मनोकामनाएं लेकर पहुंचता उसकी सभी मन्नतें पूरी होती हैं। इसलिए यह धार्मिक स्थल पर दूर से दूर से श्रद्धालू पहुंचते और उनका आर्शीवाद प्राप्त करते हैं।

श्रद्धालुओं ने बाबा का आशीर्वाद लिया

यहां हर वर्ष सामुहिक रूप से भंडारा आयोजित किया जाता है। उन्होंने ने कहा कि किसी भूखे का भोजन कराने से देवी देवता प्रसन्न होते है और उनकी विशेष कृपा होती है। इस दौरान काफी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा देवता के स्थान पर पुष्पार्पित कर उनका आशीर्वाद लिया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन : 8295154800, 9253681010, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
हरिभूमि कार्यालय, बीएसएनएल के सामने, पुल के साथ, सोनीपत
फोन 0130-4012310, 9253681028

वॉलीबॉल प्रतियोगिता में अंबर सदन ने बाजी मारी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

जेपी डीएवी पब्लिक स्कूल में खेल भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में विद्यालय के चारों सदनों अंबर, अग्नि, पृथ्वी और वायु ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता का पहला मुकाबला अंबर सदन और अग्नि सदन के बीच खेला गया, जिसमें दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने शानदार प्रदर्शन किया। रोमांचक मुकाबले में अंबर सदन ने बेहतर रणनीति और तालमेल के बल पर जीत दर्ज की। इसके बाद दूसरा मुकाबला पृथ्वी सदन और वायु सदन के बीच हुआ, जिसमें पृथ्वी सदन ने शानदार प्रदर्शन करते हुए विजय प्राप्त की।

फाइनल मुकाबला अंबर सदन और पृथ्वी सदन के बीच हुआ, जो बेहद रोमांचक और प्रतिस्पर्धी रहा। दोनों टीमों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए दर्शकों को रोमांच से भर दिया, परंतु निर्णायक क्षणों में अंबर सदन के खिलाड़ियों ने बेहतरीन तालमेल के दम पर 8 अंकों के अंतर से विजेता बनने का गौरव हासिल किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य सुनील शर्मा ने विजेता टीम अंबर सदन के खिलाड़ियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि खेल न केवल शारीरिक विकास का माध्यम हैं, बल्कि यह अनुशासन, टीम भावना का विकास होता है।

बैंड-एड गतिविधि में बच्चों ने सीखा प्राथमिक उपचार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| गन्नौर

बाल भवन इंटरनेशनल स्कूल में स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कक्षा बाल वाटिका-1 से कक्षा 2 तक के छात्रों के लिए बैंड-एड गतिविधि का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छोटे बच्चों को प्राथमिक उपचार के महत्व और उसकी सही प्रक्रिया से अवगत कराना था। कार्यक्रम के दौरान स्कूल के चिकित्सा अधिकारी ने छात्रों को बैंड-एड के उपयोग और उसकी आवश्यकता के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने समझाया कि बैंड-एड का प्रयोग छोटे-मोटे घावों या चोटों को ढकने के लिए किया जाता है, ताकि घाव साफ और सुरक्षित रहें। उन्होंने बताया कि बैंड-एड लगाने से घाव में धूल-मिट्टी या संक्रमण के प्रवेश की संभावना कम होती है और वह जल्दी भर जाता है। चिकित्सा अधिकारी ने बच्चों को बैंड-एड लगाने की सही विधि भी सिखाई।

विद्यालय के प्रधानाचार्य ने इस गतिविधि की सराहना की। कार्यक्रम में सभी छात्रों ने व्यावहारिक रूप से बैंड-एड लगाने का अभ्यास किया।

स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कक्षा बाल वाटिका-1 से कक्षा 2 तक के छात्रों भाग लेते हुए ।

पीएम 'मन की बात' कार्यक्रम से करेंगे देशवासियों से संवाद : पुनीत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| राई

भाजपा युवा नेता एवं निगम पार्षद पुनीत राई ने बताया कि देश के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 26 अक्तूबर रविवार को सुबह 11 बजे अपने लोकप्रिय कार्यक्रम 'मन की बात' के माध्यम से देशवासियों से संवाद करेंगे। पुनीत राई ने बताया कि 'मन की बात' कार्यक्रम के जरिए प्रधानमंत्री मोदी देश के कोने-कोने में रहने वाले नागरिकों से जुड़ते हैं और समाज, युवा शक्ति, महिलाओं, किसानों तथा राष्ट्र निर्माण से जुड़े मुद्दों पर अपने विचार साझा करते हैं। यह कार्यक्रम हर बार जनता को नई प्रेरणा, नई दिशा और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। पुनीत राई ने कहा कि कार्यकर्ता अपने-अपने बूथ परिवारों के साथ सामूहिक रूप से 'मन की बात' कार्यक्रम को सुनेंगे। उन्होंने कहा, "प्रधानमंत्री का प्रत्येक संदेश देश की एकता, विकास और आत्मनिर्भरता की भावना को सशक्त बनाता है।

लाडो लक्ष्मी योजना के लिए विशेष कैंप का आयोजन, महिलाओं ने कराया रजिस्ट्रेशन

गन्नौर । आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग की महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से हरियाणा सरकार द्वारा शुरू की गई लाडो लक्ष्मी योजना के तहत शनिवार को नगर पालिका कार्यालय गन्नौर में विशेष कैंप का आयोजन किया गया। यह कैंप नगर पालिका सचिव प्रदीप खरब के नेतृत्व में आयोजित किया गया, जिसमें नगर पालिका कार्यालय के सभी कर्मचारी महिलाओं के रजिस्ट्रेशन कार्य में जुटे रहे। कैंप में सुबह से ही महिलाओं की भीड़ देखने को मिली। नगर पालिका कर्मियों ने महिलाओं को योजना से जुड़ी जानकारी दी और ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन प्रक्रिया में सहयोग किया। सचिव प्रदीप खरब ने बताया कि जिला उपायुक्त के निर्देशानुसार शनिवार को उक्त कैम्प का आयोजन किया गया है। उन्होंने बताया कि लाडो लक्ष्मी योजना का उद्देश्य समाज की आर्थिक रूप से कमजोर महिलाओं को सरकारी योजनाओं से जोड़कर सशक्त बनाना है।

उड़ने के लिए तैयार फ्लाइंग कार

आसमान में उड़ते हवाई जहाज और हेलीकॉप्टर को तो हम सबने देखा है। अब बस कुछ ही वर्षों में आस-पास की दूरियों को तय करने के लिए फ्लाइंग कारें भी उड़ती हुई दिखने लगेंगी। कई विदेशी कंपनियां इस दिशा में पूरी तरह रेडी हो चुकी हैं तो अपने देश में भी इस बारे में जोर-शोर से तैयारी की जा रही है। भविष्य के नए हवाई सफर पर एक नजर।

टीकैब कंपनी चीन की ई20 एयरटैक्सी

कवर स्टोरी
एन. के. अरोड़ा

उड़ने वाली कारें यानी फ्लाइंग कार या रोडेबल एयरक्राफ्ट यानी ऐसी गाड़ियां, जो सड़कों पर चल भी सकें और जरूरत पड़ने पर उड़ान भी भर सकें। अब ये केवल हॉलीवुड की फिल्मों का हिस्सा भर नहीं हैं बल्कि ये हकीकत है। हां, यह बात अलग है कि अभी इसका उपयोग लोगों ने शुरू नहीं किया है। अभी ये कारें सीमित स्तर पर प्रोटोटाइप, परीक्षण, नियामक मंजूरी और टेस्ट फ्लाइट के दौर से गुजर रही हैं। अभी सड़क पर दौड़ने और उड़ान भरने वाली ये कारें, आम लोगों के लिए उपलब्ध नहीं हैं। लेकिन चीन, जापान, अमेरिका और यूरोप के कई देशों में ये कारें जल्द से जल्द आम लोगों के घरों के गैराज में दिखने लगेंगी।

कई स्तरों पर हो रही तैयारी: साल 2025 के अंत तक दुनिया भर में कई कंपनियां ऐसी

स्काई ड्राइव, जापान की एयरटैक्सी

इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेक ऑफ एंड लैंडिंग (वीटीओएल) कारों को पूरी तरह तैयार कर लेंगी, क्योंकि इन कंपनियों की फ्लाइंग कारों की प्रगति महत्वपूर्ण चरणों में है। कुछ देशों और कंपनियों ने तो अपनी कारों की सूची भी सोशल मीडिया पर जारी कर दी है। इस समय दुनिया भर के अलग-अलग देशों में करीब 250 ऐसी कंपनियां हैं, जो उड़ने वाली कारों यानी फ्लाइंग टैक्सियों या वीटीओएल परियोजनाओं पर काम कर रही हैं। कई प्रोटोटाइप पहले ही हवा में उड़ान भर चुके हैं, कुछ मानव पायलट के साथ और कुछ बिना इंसानी ड्राइवर के। उदाहरण के लिए टर्की में सीजेरी का प्रोटोटाइप और जापान में स्काई डाइव का प्रोटोटाइप हवा में उड़ान भर चुका है। कई कंपनियां एयर टैक्सी शुरू करने की बिल्कुल व्यावहारिक योजनाएं बना चुकी हैं, तो कुछ देशों ने सर्टिफिकेशन की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। कहने का मतलब उड़न कारें

जॉबी एविएशन, अमेरिका की ईवीटॉल

यानी, जमीन और हवा दोनों पर चलने वाली कारें भले अभी दुनिया में आम लोगों के इस्तेमाल में आना शुरू न हुई हों, पर इनके एक साथ पूरी दुनिया में इतनी बड़ी संख्या में प्रोजेक्ट काम कर रहे हैं कि दिन-रात इनके बारे में बातें होना स्वाभाविक है। इनके उज्ज्वल भविष्य को देखते हुए दुनिया के बड़े-बड़े उद्योगपति इन कारों पर भारी निवेश भी कर रहे हैं।

कई कंपनिया हैं एक्टिव: आज दुनिया के जिन देशों में प्रमुख कंपनियां ऐसी फ्लाइंग कारें बनाने में जुटी हुई हैं, उनमें संयुक्त राज्य अमेरिका में जॉबी एविएशन ने एफएए से एयर करियर प्रमाणपत्र हासिल किया है और डेल्टा एयरलाइंस के साथ साझेदारी की है। इसी तरह आर्चर एविएशन ने भी यूनाइटेड एयरलाइंस से 10 मिलियन डॉलर प्राप्त किया है। इसी तरह जेस्टन वन नामक एक व्यक्तिगत उड़ान वाहन भी अमेरिका में विकसित किया गया है, जिसकी कीमत 1 लाख 28 हजार डॉलर है और जिसे उड़ाने के लिए किसी पायलट लाइसेंस की जरूरत नहीं है। जबकि चीन एक्सपेंग एयरोहॉट दुनिया की पहली ऐसी कंपनी है, जिसने बिना पायलट के यात्री उड़ानों के लिए नियामक स्वीकृति प्राप्त कर ली है। इसने लैंड एयरक्राफ्ट करियर नामक मॉड्यूलर कार विकसित की है, जिसमें एक फोल्डेबल ईवीटीओएल है। टीकैब टैग कंपनी ने ई-20 नामक मानवयुक्त ईवीटीओएल विकसित की है। इसी तरह ब्राजील ने ईव एयर मोबिलिटी, जापान की स्काई ड्राइव और जर्मनी की लिलियम बोलोकॉप्टर कंपनियों ने भी अपनी-अपनी उड़न कारें विकसित कर ली हैं और इन सबकी हवा में उड़ने और जमीन में जरूरत पड़ने पर चलने वाली ये कारें परीक्षण और अपग्रेडेशन की प्रक्रिया से गुजर रही हैं। इन दिनों इसी काल्पनिक सच को हकीकत में बदलने के लिए विकसित देशों में दर्जनों उड़न कारें अपनी बुनियादी उड़ाने भर रही हैं या दूसरे शब्दों में ट्रेंड हो रही हैं।

ऐसे आई सुर्खियों में: फ्लाइंग कारों की चर्चा अचानक इसलिए बढ़ी है, क्योंकि पिछले दिनों दो उड़ने वाली कारें एक फ्लाइंग शो के दौरान हवा में ही टकरा गईं और एक बड़ा हादसा हो गया। यह अलग बात है कि इसमें कोई जनहानि नहीं हुई। दरअसल, चीन के जिलिन में बीते 16 सितंबर 2025 की दोपहर को चल रहे चांगचुन एयर शो के दौरान एक्सपेन एयरोहॉट की दो वीटीओएल आपस में टकराकर दुर्घटनाग्रस्त हो गई। इस टक्कर से एक यात्री घायल हो गया, जिसे जानलेवा चोट नहीं लगी। लेकिन इस दुर्घटना की वजह से रातों-रात पूरी दुनिया की आटोमोबाइल इंडस्ट्री में वीटीओएल कारों के किस्से पूरी तरह से छा गए और हर किसी को पता लग गया कि उड़ने वाली कारें अब विज्ञान कथा भर नहीं हैं, वास्तविक जिंदगी का हिस्सा बनने की कगार पर हैं। निकट भविष्य में इनका उपयोग शहरी परिवहन, आपातकालीन सेवाओं और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में बहुत कॉमन हो जाएगा।

सुरक्षा है बड़ा मुद्दा: जिस तरह इन दिनों चीन में हुई हवाई दुर्घटना के कारण दो एयर टैक्सियों के आपस में भिड़ जाने पर खूब चर्चा हो रही है, उससे उड़ने वाली कारों यानी ईवीटीओएल की तकनीकी सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठ खड़े हुए हैं। माना जाता है कि ऐसी काल्पनिक कारों का यह पहला मिड एयर कॉलिशन है। लेकिन यह अकेला कारण भी नहीं है, जिसकी वजह से इन उड़न कारों की बातें हो रही हैं। दरअसल, अब नए मॉडल के नई लाइफस्टाइल को सपोर्ट करने वाले शहरों के बसाए जाने की बात भी हो रही है। इन्हीं नए शहरों की जरूरतों को ध्यान में रखकर अर्बन एयर मोबिलिटी पर जबर्दस्त चर्चा हो रही है, क्योंकि भविष्य के शहरों में लोगों के पास इतना समय नहीं होगा कि वे ट्रैफिक में घंटों फंसे रह सकें। इसलिए ऐसी कारों की जरूरत जबर्दस्त ढंग से पैदा होने वाली है, जो हवा में उड़कर मिनटों में एक जगह से दूसरी जगह कई किलोमीटर दूर पहुंच सकती हैं।

सिर्फ सुरक्षा का ही नहीं, वास्तव में इन वाहनों की उड़ान और लैंडिंग की अनुमति भी एक बड़ी समस्या होगी, जिस पर इन दिनों

एक्सपेन एयरोहॉट ईवीटॉल, चीन

सिस्टमेटिक ढंग से प्लानिंग हो रही है। लोगों को उत्सुकता है कि एयर ट्रैफिक रेगुलेशन, पायलट ट्रेनिंग, बैटरी रिलायबिलिटी, इस तरह की सभी समस्याएं एक-एक करके हल हों ताकि उड़ने वाली कारें अब फिक्शन न रह जाएं।

बहरहाल, विशेषज्ञ कहते हैं कि इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सन 2030 तक दुनिया के अनेक बड़े शहरों के आसमान में हवा में उड़ान भरने वाली कारें दिखने लगेंगी। *

भारत में भी जल्द उड़ेंगी एयरटैक्सी

केवल विदेशों में ही नहीं अपने देश भारत में भी ईवीटॉल विकसित करने में कुछ कंपनियां सक्रिय हैं। डीजीसीए ने पंजाब की एक कंपनी के एयरटैक्सी मॉडल को डिजाइन अप्रूवल सर्टिफिकेट भी दे दिया है। एयरटैक्सी के टेकऑफ और लैंडिंग के लिए वर्टिपोर्ट बनाने की प्लानिंग पर भी काम किया जा रहा है। बेंगलुरु की एक कंपनी भी इस दिशा में एक्टिव है। सब कुछ प्लानिंग के अनुसार फाइनल होने पर वर्ष 2028 तक दिल्ली-एनसीआर में एयर टैक्सी का परिचालन शुरू हो सकता है। इसके बाद कोलकाता, मुंबई जैसे अन्य मेट्रो शहरों में भी एयरटैक्सी चलने की संभावना है।

अवेयरनेस / संध्या सिंह

इन दिनों लगभग रोज ही साइबर फ्रॉड की अनेक घटनाएं घटित हो रही हैं। साइबर क्रिमिनल्स नए-नए तरीकों से लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। ऐसे में जरा सी लापरवाही आपका भारी आर्थिक नुकसान करा सकती है। इसलिए साइबर वर्ल्ड में हमेशा एलर्ट रहें।

खूब हो रहा साइबर फ्रॉड ना बरतें कोई लापरवाही

आजकल सोशल मीडिया पर साइबर तस्करी, साइबर अपराध, वित्तीय धोखाधड़ी, डीपफेक में काफी बढ़ोत्तरी हो रही है। ऐसी धोखाधड़ी अब आम हो गई है।

सोशल मीडिया पर फ्रॉड नेटवर्क: हाल के दिनों में लोगों को व्हाट्सएप पर नकली ई-चालान मिलना, नकली बिजली, पानी, गैस, केबल के बिल मिलने जैसी चीजें आम हो गई हैं, जिनमें व्हाट्सएप पर मैसेज भेजा जाता है और उसमें यह वॉर्निंग दी जाती

है कि यदि समय पर बिल का भुगतान नहीं किया गया, तो उनका कनेक्शन काट दिया जाएगा। हड़बड़ी में लोग अकसर व्हाट्सएप में आए उस बिल पर क्लिक कर देते हैं और कुछ समय बाद उन्हें पता चलता है कि उनके खाते से काफी पैसे निकाल लिए गए हैं। यहां तक कि फेसबुक पर भी बहुत रोचक कहानियां बनाकर उन्हें डाल दिया जाता है और जब लोग उन्हें पढ़कर आगे की कहानी जानने के लिए दिए गए लिंक पर क्लिक करते हैं, तो उस लिंक पर कई बार एडल्ट साइट्स से उनका सामना होता है या गलत लिंक पर क्लिक करने के कारण वे साइबर ठगी का शिकार हो जाते हैं।

हो रहा भारी नुकसान: साइबर क्राइम अब एक ऐसी समस्या के रूप में सामने आ रहा है, जो हमारा पैसा और मन की शांति दोनों को खत्म कर रहा है। साइबर अपराध पर 254वीं संसदीय स्थायी समिति की रिपोर्ट ने इस बात का खुलासा किया है कि साइबर ठगी के जरिए 31,500 करोड़ रुपए से अधिक का नुकसान हुआ है। इस साल साइबर अपराधी एक साथ कई मोर्चों पर सक्रिय हैं। संसदीय रिपोर्ट भी इस बात की पुष्टि करती है कि साइबर अपराधी एक साथ कई हथकंडे आजमा रहे हैं। लोग यह समझते हैं कि इनसे बचने के उपाय, अत्यधिक कुशल हैकर्स का काम है, लेकिन इससे आम लोगों को यह समझना होगा कि उनको नेविगेट करने की क्षमता हम सबमें होनी जरूरी है।

बीते जुलाई माह में गुरुग्राम पुलिस द्वारा एक ऐसे कॉल सेंटर का भंडाफोड़ किया गया, जहां जालसाज वीआईपी नंबर्स और पुलिस स्टेशन की पृष्ठभूमि का एआई द्वारा उपयोग करके वीडियो कॉल पर कानून अधिकारी के रूप में पेश आते थे, जो लोगों को उनके नाम पर एक पैकेट में अवैध वस्तुएं होने का हवाला देकर उन्हें गिरफ्तार कर लेने के लिए डराते थे और उन्हें यह धमकी देते थे कि यदि वह तुरंत अपनी जमानत या वैरीफिकेशन के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान नहीं करते, तो उन्हें कानूनी कार्यवाही का सामना करना पड़ सकता है। पुलिस द्वारा छापे में स्क्रीन स्क्रिप्ट और जाली आईडी मिली, इसके बाद कई गिरफ्तारियां हुईं, जिनका लिंक दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के नेटवर्क से था, जो सीधे भारतीयों को अपना निशाना बना रहे थे।

जागरूकता है जरूरी: यह सही है कि आज के दौर में साइबर अपराध इतने जटिल हो गए हैं और लोगों को ठगी का शिकार बनाने के उनके तरीके इतने दबे छिपे होते हैं कि आम लोगों में जागरूकता का अभाव होने के कारण वे सहजता से इसका शिकार हो जाते हैं। मसलन, अगर आपको कोई पुलिस अधिकारी होने का दावा करने वाले का कॉल आता है तो उनसे यह पूछा जा सकता है कि वीडियो कॉल के जरिए भला गिरफ्तारी कैसे हो सकती है? इस तरह की समझदारी और अवेयरनेस से फ्रॉड से बच सकते हैं।

बिना डरे रहें सजग: इन जटिल साइबर अपराधों के खिलाफ सुरक्षा के समाधान या तरीके इतने कठिन नहीं है, जितने हम समझते हैं। हमें हर चीज पर सवाल उठाना सीखना होगा और जीरो ट्रस्ट नीति अपनानी होगी। एक बार जब हम ऐसे मामले में जीरो ट्रस्ट नीति अपनाने लगते हैं तो साइबर सुरक्षा आसान

हो जाती है। किसी भी लिंक अटैचमेंट या मैसेज पर जाने से पहले बिना सोचे-समझे क्लिक नहीं करना चाहिए, क्योंकि साइबर जगत में हर अंजान को जांचने-परखने की नीति अपनाएं। किसी भी लिंक पर क्लिक करने से पहले सोचें, विचार करें। वेडिंग इंविटेशन या ई-चालान की पीडीएफ/जेपीईजी फाइल होनी चाहिए, न कि एपीकेएस। एपीकेएस पर क्लिक करने का ही मतलब है आप हैकर को क्लिक कर रहे हैं। किसी को भी अपना ओटीपी या यूपीआई पिन या स्क्रीन शेयर न करें। क्योंकि कानून आपको इन्हें साझा करने के लिए नहीं कह सकता। ऑड यूआरएलएस, नए हैंडल्स, मिस मैच्ड लोगो, भ्रम पैदा करने वाली ईमेल आईडी पर क्लिक न करें। अगर आपके खाते से पैसों की ठगी हो जाती है तो 1930 नंबर पर कॉल करें और अपने बैंक को तुरंत फोन करके इसके बारे में सूचित करें। कुल मिलाकर ऑनलाइन ठगी से बचने के लिए बिना डरे एलर्ट रहना जरूरी है। *

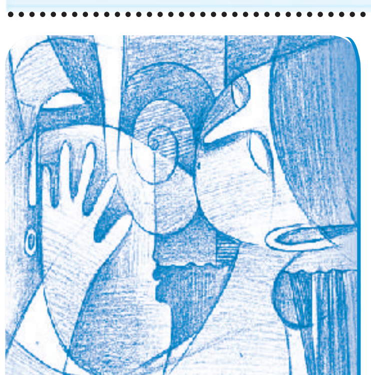

कविता
आरती आस्था

छोड़ना

मां छोड़ देती है
सब कुछ
अपने बच्चे के लिए।
वही बच्चा होकर बड़ा
छोड़ देता है
मां को
अपने प्रेम के लिए।
छोड़ते हैं दोनों ही
अपने-अपने प्रेम के लिए।
पर लगाना अनुमान
है लगभग असंभव
किसका छोड़ना
और किसका छूट जाना
होता है
ज्यादा पीड़ादायक।

व्यंग्य / भूपेंद्र भारतीय

लचकलाल को भी मिले नोबेल पुरस्कार

भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि, भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थान तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह भी क्यों नहीं प्रसिद्ध बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं!

हर साल अक्टूबर के महीने में नोबेल पुरस्कार का हल्ला रहता है। इस बार भी हल्ला रहा। लचकलाल फिर नोबेल पुरस्कार के लिए बेचैन हुए। वह नोबेल पुरस्कार चाहते हैं, भ्रष्टाचार के मामले में। उनका कहना है, इस क्षेत्र में उनसे अच्छा और श्रेष्ठ कार्य किसी ने नहीं किया है, ना ही कोई कर सकता है। इस क्षेत्र में उन्होंने जितने नवाचार किए हैं, उतने तो अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश ने अपना माल बेचने के लिए विश्व शांति के क्षेत्र में भी नहीं किए होंगे।

लचकलाल का यह कहना है कि भ्रष्टाचार में गोपनीयता के मामले में उन्हें नोबेल पुरस्कार मिलना चाहिए। वह कैसे-कैसे टेबल के नीचे से सेवा शुल्क लेकर जनसेवा करते रहे हैं, वो रिकॉर्ड बने हैं। लचकलाल भ्रष्टाचार में यूपीआई की भी सुविधा ले रहे हैं। उन्होंने भ्रष्टाचार को ऑन लाइन कर दिया है। उनकी टेबल पर घूस ऑन लाइन भी ली जाती है-जल्द यह तख्ती भी लग सकती है। लचकलाल को लगता है, वे अपनी भ्रष्टाचार की सेवाओं से विश्व शांति का मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। भ्रष्टाचार को उन्होंने अब शासकीय शिष्टाचार मान लिया है। इस प्रतिभा के पीछे उन्होंने ऐसी दिव्य दृष्टि पाई है कि एक बार में ही वह अच्छे से अच्छे ईमानदार अधिकारी को देखते ही समझ जाते हैं, यह अधिकारी अपनी सेवा कितने में प्रदान करेगा? इसकी सेवा का लाभ कैसे लेना है? इसकी निष्ठा का कितना दाम लगाना है? लचकलाल यह सब अपनी भ्रष्टाचारी दिव्य दृष्टि से कुछ ही दिनों में ताड़ लेते हैं कि साहब टेबल के कितने ऊपर और टेबल के नीचे कितने तक धंसे हैं? लचकलाल ने अपनी इस दिव्य दृष्टि और कला के सहारे बहुत से नवागत अधिकारियों, कर्मचारियों को भी भ्रष्टाचार के मामले में प्रशिक्षित किया है। कोई कितना ही ईमानदार व्यक्ति शासकीय सेवा में 'सेवा परमोधर्मः' की भावना से आए, लेकिन उनकी दिव्य दृष्टि उसे भ्रष्टाचार की कला बहुत ही जल्दी सीखा देती है। इस कला को सीखने के बाद वह नवागत अधिकारी भ्रष्टाचार के दूध में पताशे(बताशे) की तरह घुल जाता है। लचकलाल भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने में उसी तरह से दक्ष हैं, जैसे इन दिनों मिस्टर ट्रंप विश्व शांति की चाशनी बनाने के लिए अपनी वैश्विक चम्मच हिला रहे हैं। वह बात अलग है कि चाशनी बन नहीं रही है। इस बार भी तथाकथित विश्व शांतिदूत नोबेल पुरस्कार के लिए चम्मच हिलाते ही रह गए।

खैर! मिस्टर लचकलाल अपने अभियान में निरंतर आगे बढ़ रहे हैं। उन्हें भ्रष्टाचार की चाशनी बनाने और उसमें से जलेबी निकालने से कोई नहीं रोक सकता है। उनके पास भ्रष्टाचार के मामले में भ्रष्टों का जनाधार है। वे अपनी इस कला से लोकतंत्र की सेवा करना चाहते हैं। उन्हें लगता है कि इस कला से राष्ट्र निर्माण भी आसानी से किया जा सकता है। कम बजट में सड़कों, पुलों, सरकारी भवनों और सेवाओं का कार्य पूरा हो जाता है। भ्रष्टाचार उनके लिए सरकारी कार्यशैली का अभिन्न हिस्सा है। उसके बगैर अधिकारियों को कार्य करने में मजा नहीं आता और सरकारों को सरकार चलाने में मजा नहीं आता। लचकलाल की मानें तो वह जनता और सरकार के बीच भ्रष्टाचार, पुल का काम करते हैं। भ्रष्टाचार के लाभ और विशेषताओं पर लचकलाल बड़े-बड़े लेक्चर दे सकते हैं। उनका कहना है कि पहले भी बहुत से मंत्री और जनप्रतिनिधि भ्रष्टाचार में लिप्त रहते हुए प्रतिष्ठित प्रबंधन संस्थानों तक में लेक्चर फटकार चुके हैं तो वह क्यों नहीं बौद्धिक संस्थानों में लेक्चर दे सकते हैं! उन्हें लगता है कि वह भ्रष्टाचार विषय के मामले में बुद्धिजीवी बन गए हैं। अब आखिर उन्हें क्यों नहीं इस क्षेत्र में सेवा, शोध और नवाचार के लिए नोबेल पुरस्कार मिले! *

लघुकथा / अलका जैन 'आराधना'

प्रेरणा

आईआईटी में सेलेक्शन न होने से हताश रौनक, रेल की पटरियों के किनारे चला जा रहा था। एक पल के लिए उसके मन में खुद को खत्म करने का ख्याल आ रहा था। अचानक मम्मी के शब्द उसके कानों में गूंजने लगे, 'रेल की पटरियां रेल को गंतव्य तक पहुंचाती हैं। बेटा, इनसे जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा लेनी चाहिए... क्योंकि वास्तव में चलना ही जिंदगी है।'

रौनक के चेहरे पर मुस्कान आ गई। वह सोच रहा था कि आईआईटी में सेलेक्शन ना होना तो एक पड़ाव भर है, जीवन में और भी बहुत कुछ है करने के लिए। अब वह मुस्कुराते हुए घर वापसी का फैसला कर चुका था। घर पहुंचा तो मम्मी-पापा बेसब्री से उसका ही इंतजार कर रहे थे। दोनों ने एक-साथ उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'तुम्हारा पसंदीदा मूंग की दाल का हलवा बनाया है, इसे खाओ और नई राह पर आगे बढ़ने की शुरुआत करो। जिंदगी किसी मोड़ पर खत्म नहीं होती, नई शुरुआत कहीं से भी की जा सकती है।'

रौनक अपने मम्मी-पापा के पैरों में झुक गया। उसे लग रहा था कि रेल की पटरियों ने उसे जीवन से पलायन की नहीं जीवन को गले लगाने की प्रेरणा दे दी। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

प्रेमानुभूति में भीगी कविताएं

प्रेम एक ऐसा विषय है, जिस पर असंख्य कविताएं और कहानियां लिखी जाती रही हैं लेकिन कोई भी रचना इसके बारे में स्थायी या अंतिम सच साबित नहीं हो पाती। दरअसल, यह इंसानी मनोजगत में उपजने वाली भावनाओं से निर्मित ऐसी दुनिया होती है, जिसे हर इंसान अलग तरीके से अनुभूत करता है। सविता सिंह के नए कविता संग्रह 'प्रेम भी एक यातना है' की कविताएं प्रेम के ऐसे ही अनदेखे, अबूझ क्षितिज से हमारा परिचय कराती हैं। यहां उनकी व्यक्तिगत अनुभूतियां बड़ी कोमलता के साथ प्रकृति और समष्टि में समाहित हो जाती हैं। इसी बिंदु पर उनकी कविताओं के व्यापक अर्थ हमारे सामने उद्घाटित होते हैं। प्रेम के जीवन में पदार्पण का मनोहारी बिंब इन पंक्तियों में देख सकते हैं, *'पूरा-पूरा दिन संगीत सा बजता रहता है आजकल/ बेजान दोपहरें भरी रहती हैं तितलियों के रंगों से/ मधुमक्खियों के पंखों से उपजती धुनों से।'* (प्रेम) इसी तरह एक अन्य कविता 'प्रेमरत' की ये पंक्तियां शरीर के स्तर से बहुत गहन मन-आत्मा के किसी तल पर घटित हो रही अनुभूतियों को व्यक्त करती हैं, *'अभी हमारे पास कहने को क्या था/हम तो भाषा में थे ही नहीं/हमारे पास महज अव्यक्त आवाजें थीं कुछ/ शब्द दूर थे हमसे।'* कह सकते हैं, आज के अमानवीय होते जा रहे हिंसा से आक्रांत युग में ये कविताएं, हमारे भीतर कुछ बेहतर बचे रहने की उम्मीद कायम रखने का संबल देती हैं। *

पुस्तकः प्रेम भी एक यातना है (कविता संग्रह), **लेखिकाः** सविता सिंह, **मूल्यः** 199 रुपए, **प्रकाशकः** राजकमल पेपरबैक्स, नई दिल्ली

आयोजन
वीना गौतम

राजस्थान में अजमेर के निकट पुष्कर में आयोजित होने वाला धार्मिक-सांस्कृतिक पुष्कर मेला, पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है। यहां की भौगोलिक विशिष्टता और इससे जुड़ी धार्मिक मान्यताएं इस स्थल को और भी महत्वपूर्ण बना देते हैं। आगामी 30 अक्टूबर से 5 नवंबर तक आयोजित होने वाले इस मेले की खासियतों पर एक नजर।

देश की धार्मिक-सांस्कृतिक चेतना का संगम पुष्कर मेला

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश की आत्मा उसकी लोक-संस्कृति और धार्मिक परंपराओं में बसती है। ऐसी ही लोकधर्मी परंपराओं का वाहक है पुष्कर मेला। पुष्कर मेला न केवल राजस्थान बल्कि संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक धरोहर का प्रतीक है। पुष्कर मेला हर साल कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर आयोजित होता है।

मेले से जुड़ी धार्मिक मान्यताएं: पुष्कर भारत का अद्वितीय नगर है। सृष्टि के रचयिता भगवान ब्रह्मा का देश में एकमात्र मंदिर यहीं स्थित है। पुष्कर की धार्मिक मान्यता यह है कि ब्रह्माजी सृष्टि की रचना करने के बाद यज्ञ करने के लिए एक पवित्रस्थल की खोज कर रहे थे, तब एक कमल पुष्प उनकी हथेली से गिर पड़ा और यह जहां गिरा, उस स्थान पर पुष्कर झील बन गई। इसलिए यह स्थल पुष्कर तीर्थ कहलाता है।

पुष्कर झील में स्नान करते श्रद्धालु

कार्तिक पूर्णिमा के दिन इस झील में स्नान करना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। मान्यता है कि इस दिन ब्रह्माजी स्वयं झील के जल में स्नान करने के लिए आते हैं, जो व्यक्ति इस दिन यहां स्नान करता है, उसके सारे पाप नष्ट हो जाते हैं। यही कारण है कि पुष्कर मेला के समय देश के कोने-कोने से लाखों श्रद्धालु और साधु-संत यहां पवित्र स्नान के लिए पहुंचते हैं। धार्मिक दृष्टि से यह मेला केवल स्नान या पूजा का आयोजन नहीं बल्कि धर्म, भक्ति और लोकआस्था की जीवंत अभिव्यक्ति है। इस अवसर पर पुष्कर झील के घाटों पर होने वाले दीपदान और आरती का दृश्य भारतीय अध्यात्म का जीवंत रूप प्रस्तुत करता है।

लोकजीवन-परंपराओं का महाकुंभ: पुष्कर मेला सिर्फ भारतीय लोक-संस्कृति का ही बहुत बड़ा उत्सव नहीं है, यह पशु व्यापार का भी बहुत बड़ा मेला है। यहां समूचे भारत के ग्रामीण जीवन की जीवंत झांकी देखने को मिलती है। राजस्थान के विभिन्न जिलों से लेकर इस मेले में हरियाणा, पंजाब, गुजरात और उत्तर प्रदेश तक के ग्रामीण लोग अपनी पारंपरिक वेशभूषा, गीत, नृत्य और हस्तशिल्प के साथ आते हैं। पुष्कर मेले में होने वाले लोकनृत्य प्रतियोगिताओं में मटकी दौड़, ऊंट सजावट, ग्रामीण खेल, लोकसंगीत, कठपुतली, नाटक और पारंपरिक वाद्ययंत्रों की धुनें, भारत की विविधता में एकता का अद्भुत संदेश देती हैं। यह मेला वास्तव में ग्रामीण भारत की सजीव आत्मा पेश करता है। यहां महिलाएं पारंपरिक लहंगे, ओढ़नी आदि में सजी दिखती हैं और पुरुष रंग-बिरंगी पगड़ियों में सजते हैं। इसी वेशभूषा में ये लोग आयोजित होने वाले लोक गीत-संगीत के कार्यक्रमों में भाग लेते हैं। यहां की रंग-बिरंगी भीड़ वास्तव में भारत की जीवंत संस्कृति की धड़कन है, जिसने आधुनिकता के बीच भी अपनी जड़ें मजबूती से जमा रखी हैं।

व्यापार-पर्यटन का अवसर: जैसा हम सब जानते हैं कि पुष्कर मेले में भारत का सबसे बड़ा पशु मेला भी लगता है। विशेष रूप से ऊंट और घोड़ों के व्यापार के लिए। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में पशुधन आजीविका का महत्वपूर्ण आधार है। इस मेले के दौरान यहां हजारों ऊंट, घोड़े और गाय, बिकने के लिए आते हैं। इस खरीद-फरोख्त के जरिए स्थानीय अर्थव्यवस्था को खूब बल मिलता है। इसके साथ ही इस मेले

आयोजित होता है बहुत बड़ा पशु मेला

का पर्यटन उद्योग के लिहाज से भी बहुत महत्व होता है। पुष्कर मेले के दौरान देश-विदेश से लाखों सैलानी यहां आते हैं। विदेशी पर्यटक विशेषकर यहां भारतीय संस्कृति, योग, संगीत और अध्यात्म का जीवंत अनुभव करने आते हैं। इस मेले में स्थानीय हस्तशिल्प, कपड़े, गहने और लोककला की बिक्री से ग्रामीण कारीगरों की आय में उल्लेखनीय वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय लैंडमार्क के रूप में प्रतिष्ठित: आज पुष्कर मेला केवल एक पारंपरिक आयोजन भर नहीं है। यह वैश्विक सांस्कृतिक उत्सव बन चुका है। भारत सरकार और राजस्थान पर्यटन विभाग ने इसे ग्लोबल फेयर के रूप में विकसित किया है। सोशल मीडिया और यात्रा चैनलों के कारण पुष्कर मेले की पहचान दुनिया के कोने-कोने में पहुंच चुकी है। पुष्कर मेले के दौरान यहां योग शिविर, कल्चरल वर्कशॉप और डेजर्ट सफारी जैसे आयोजन पर्यटकों का मन मोह लेते हैं। आज जब अपनी सांस्कृतिक विरासत को अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारत बहुत करीने से प्रस्तुत कर रहा है, तब पुष्कर इस गतिविधि का महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर उभरा है। आज पुष्कर मेला अपनी लोक-आध्यात्मिक पहचान के लिए राष्ट्रीय लैंडमार्क की ख्याति हासिल कर चुका है। यह मेला दर्शाता है कि भारतीय सभ्यता, लोकजीवन की सहज अभिव्यक्ति में भी फलती-फूलती है। *

अनोखा भौगोलिक स्थल भी है पुष्कर

पुष्कर अरावली पर्वतमाला के बीच में स्थित है। जहां रेगिस्तान का शुष्क भू-भाग और झील का शांत जल एक अद्भुत विरोधाभास रचते हैं। यह क्षेत्र पर्यावरणीय दृष्टि से दुनिया के विशिष्ट क्षेत्रों में गिना जाता है। क्योंकि राजस्थान में स्थित यह ऐसा क्षेत्र है, जहां जल और मरुस्थल का साझा अस्तित्व देखने को मिलता है। ऐसी विविधता का दूसरा उदाहरण दुर्लभ है। अक्टूबर और नवंबर के महीने में पुष्कर का तापमान बेहद सुहावना होता है। इस कारण इस मौसम में यहां देश-विदेश के लाखों पर्यटक घूमने के लिए आते हैं। पर्यटकों के लिए यह मौसम और पुष्कर की विशिष्ट भौगोलिक स्थिति महत्वपूर्ण आकर्षण का जरिया बन जाती है। झील के चारों ओर फैले घाट, मंदिरों की कतारें और दूर तक फैले रेत के टीले, इस स्थान को एक आध्यात्मिक केंद्र बना देते हैं। यही कारण है कि आज के दौर में पुष्कर की प्रतिष्ठा एक वैश्विक, सांस्कृतिक स्थली के रूप में भी है।

दीपावली के बाद कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को देव उठनी, देवोत्थानी या प्रबोधिनी एकादशी पर्व मनाते हैं। पुराणों में इस दिन की पूजा, व्रत का बहुत महत्व बताया गया है। इसके महात्म्य के बारे में जानिए।

अत्यंत पुण्यकारी-शुभ फलदायी प्रबोधिनी एकादशी व्रत-पूजन

पर्व-परंपरा
प्रभा पारिक

चातुर मास वर्षा काल के चार महीनों के शयन के बाद जब देव उठते हैं, उस दिन कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि होती है। इसी शुभ अवसर से मनुष्यों को देवताओं के आह्वान का अवसर प्राप्त होता है। इसी तिथि से मांगलिक कार्यों, जैसे गृह प्रवेश, विवाह आदि आरंभ होते हैं।

धार्मिक मान्यता: प्रबोधिनी एकादशी की मंगल बेला पर भगवान विष्णु का विवाह शालीग्राम रूप में वृंदा तुलसी के साथ किया जाता है। सुबह तुलसी के चौरे, क्यारी, गमले को साफ करके गेरू, चूने से मांड़ने अथवा रंगोली बना कर सजाया जाता है। फूल, धूप, दीप, आरती की जाती है। मौसमी फलों के साथ मूली, केला, रूई, ग्वार फली, सुआली आदि अर्पण करते हैं। शाम के समय प्रतीकात्मक रूप से घरों में, मंदिरों में तुलसी का विवाह शालिग्राम जी के साथ रचाया जाता है। इस विवाह में घर में पुत्री के विवाह में दिया जाने वाला श्रंगार और सुहाग की वस्तुएं अर्पित की जाती हैं। ठीक वैसे ही जैसे हम अपने घर-परिवार की कन्याओं के विवाह पर करते हैं। ये श्रंगार की सामग्री किसी भी नव-विवाहिता स्त्री, पुरोहित या सुहागन को देने की प्रथा है। इस दौरान मंगल गीतों के साथ इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। जिस घर में कन्यादान का अवसर न मिलने की स्थिति हो, वे तुलसी विवाह को आयोजित करके कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकते हैं।

व्रत का महात्म्य: पुराणों में बताया गया है कि कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की प्रबोधिनी एकादशी के व्रत का फल एक सहस्त्र अश्वमेघ यज्ञों और सौ राजसूय यज्ञों के बराबर माना जाता है। जिस वस्तु या पद या आकांक्षा को प्राप्त करना कठिन लगे, इस व्रत को करने से वो सहज ही प्राप्त हो जाती है। इस दिन रात्रि जागरण का विशेष महत्व है। माना जाता है कि प्रबोधिनी एकादशी के दिन किए गए व्रत, दान-पुण्य का फल, समस्त तीर्थों की यात्रा करने, गौ, स्वर्ण, भूमि आदि के दान से मिलने वाले फल के समतुल्य होता है। इस दिन व्रत और पूजन से निःसंतान को संतान की प्राप्ति होती है। यह व्रत उद्धार करने वाला और भगवान में आस्था बढ़ाने वाला माना जाता है। इस व्रत को श्रद्धापूर्वक करने से भगवान नारायण प्रसन्न होते हैं। साधक के पितरों को सद्गति की प्राप्ति होती है। पिछले हजार जन्मों में किए गए पाप भी इस एकादशी को रात्रि-जागरण करते हुए श्री नारायण जप करने से नष्ट हो जाते हैं। इस दिन व्रत के दौरान श्रद्धापूर्वक 'ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय' का जाप करना बहुत कल्याणकारी और पुण्य फलदायी होता है।

मनाते हैं कई रूपों में: प्रबोधिनी एकादशी के पर्व को अत्यंत पुण्यकारी माना जाता है। यही वजह है कि विभिन्न राज्यों में इसे अलग-अलग तरह से मनाते हैं। इस दिन को पवित्र मानते हुए नर के रूप में नारायण एवं नारी के रूप में नारायणी की स्तुति करते हैं। तुलसी का महत्व, हमारे स्वास्थ्य, सुख समृद्धि, वास्तु से जोड़कर देखा जाता है। गुजरात में दीपावली के पूर्व की एकादशी से देव उठनी एकादशी तक प्रतिदिन सुबह जल्दी उठकर घर के द्वार पर रंगोली, तुलसी पूजा और दीपमाला सजाने की प्रथा है। यह कार्तिक पूर्णिमा के दिन दीपमाला के साथ पूर्ण होती है। *

विशिष्ट पेड़ / वीना

कई तरह से उपयोगी फालसे का पेड़

फालसा का वैज्ञानिक नाम ग्रेविया एशियाटिक है। यह एक छोटा झाड़ीदार पेड़ होता है, जो गर्म और उपोष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में उगता है। फालसा को अपने देश में एक लोकप्रिय फल के रूप में जाना जाता है। इसका स्वाद खट्टा, मीठा और ताजगी भरा होता है। यह पेड़ हरे, अंडाकार, मोटे और खुरदरे पत्तों वाला होता है, इसमें छोटे सफेद या हल्के गुलाबी फूल आते हैं, जबकि छोटे गोलाकार, नीले या काले रंग के फल लगते हैं।

कई राज्यों में होती है खेती: फालसा का पेड़ देश के ज्यादातर हिस्सों में पाया जाता है। मसलन, उत्तर भारत में पंजाब, हरियाणा। मध्य भारत में महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश। पश्चिमी भारत में राजस्थान, गुजरात तथा पूर्वी भारत में बिहार, झारखंड, ओड़िशा, पश्चिम बंगाल आदि में भी फालसे की खेती की जाती है। इस तरह देखें तो यह लगभग भारत के हर क्षेत्र में उगता है। दरअसल, यह गर्म और कम वर्षा वाले क्षेत्रों में अच्छी तरह से फलता-फूलता है। दोमट और हल्की बलुई मिट्टी में विशेष तौर पर फालसा का पेड़ तेजी से बढ़ता और विकसित होता है। अगर व्यावसायिक तौर पर इसकी खेती करें तो एक से दो मीटर की दूरी पर पौधे लगाए जाने चाहिए, समय-समय पर इसकी पुरानी टहनियों को काटते रहने से इसका विकास तेजी से होता है और पैदावार भी अच्छी होती है।

आर्थिक रूप से लाभकारी: फालसे की खेती से किसानों को कई तरह के लाभ होते हैं। फालसा के छोटे पेड़ हर साल 5 से 10 किलोग्राम तक फल देते हैं और अगर प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देखें तो 8 से 10 टन फालसे का उत्पादन हो जाता है। फालसे की खेती में लागत बहुत कम आती है। क्योंकि इसे खाद पानी की उतनी जरूरत नहीं पड़ती, जैसे दूसरे फल के पेड़ों को पड़ती है। फालसा, पेड़ लगाने के पहले या दूसरे वर्ष में ही फल देने लगता है। ताजे फलों का स्थानीय बाजार भी काफी आकर्षक है। फालसे का पेड़ सामान्यतः 10 से 15 सालों तक फल देता है।

स्वास्थ्य के लिए लाभकारी: फालसे में कई तरह के पोषक तत्व पाए जाते हैं। जैसे- विटामिन-ए, बी-3 और सी। साथ ही इसमें पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन और फास्फोरस जैसे खनिज तत्व भी पाए जाते हैं। फालसे में एंटीऑक्सीडेंट्स, एंटीमाइक्रोबिअल और एंटीइंफ्लेमेट्री गुण भी होते हैं, इसलिए फालसा की अच्छी-खासी मांग आयुर्वेदिक औषधियों में भी होती है। इसके अलावा फालसे के फल की मांग जूस, शर्बत, मुरब्बा आदि बनाने में भी होती है। *

नदी गाथा
निनाद गौतम

कोसी नदी को बिहार का शोक कहा जाता है, यह हम सब जानते हैं। लेकिन इसी के साथ सच्चाई यह भी है कि बिहार की जीवनरेखा या कहें बिहार का हर्ष भी यही कोसी नदी है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

बिहार का शोक ही नहीं हर्ष भी है कोसी नदी

बिहार का शोक और हर्ष कही जाने वाली कोसी नदी का उद्गम हिमालय की पर्वत श्रेणियों में नेपाल में होता है। 720 किलोमीटर लंबी यह नदी नेपाल में 441 किलोमीटर और बिहार में करीब 288 किलोमीटर बहती है। यह बिहार में सुपौल जिले में प्रवेश करती है और मधेपुरा, सहरसा, पूर्णिया, अररिया होते हुए कटिहार जिले में कुरसेला के पास गंगा में मिल जाती है।

इसलिए कहते हैं शोक: कोसी को बिहार का शोक इसलिए कहते हैं, क्योंकि हिमालय से आने वाली यह बहुप्रवाही नदी जब बिहार में प्रवेश करती है, तो इसका बहाव बहुत तेज होता है। जिस कारण यह बार-बार अपना मार्ग बदलती है। पिछली ढाई सदियों में कोसी नदी 120 किलोमीटर पश्चिम की ओर खिसककर अपना मार्ग बदल चुकी है। क्योंकि इस हिमालयी नदी में नेपाल में तीन सहायक नदियां अरुण, तामूर और सुनकोशी भी आ मिलते हैं, इसलिए जिस समय यह बिहार में घुसती है, तो इसका बहाव इतना तेज होता है कि लगभग हर साल यह नदी बिहार में बाढ़ लाने का कारण बनती है ही, यह हर साल अपने तटबंध तोड़कर प्रदेश के उत्तरी जिलों में हाहाकार मचा देती है। इसलिए कोसी को बिहार का शोक कहते हैं। इसके चलते हर साल बिहार को करोड़ों रुपए की आर्थिक हानि और काफी लोगों की जनहानि होती है।

इसलिए कहलाती है हर्ष: सच्चाई यह भी है कि एक तरफ जहां कोसी बिहार का शोक है, वहीं दूसरी तरफ यह बिहार की जीवनरेखा भी कही जाती है। क्योंकि गंगा की तरह ही हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली यह नदी हर साल बाढ़ के समय अपने साथ जो पोषक तत्वों से भरी गाद या सिल्ट लाती है, उससे उत्तर बिहार की मिट्टी बेहद उपजाऊ हो जाती है। कोसी परियोजना के तहत लाखों हेक्टेयर जमीन में सिंचाई होती है और बिहार में उत्तम दर्जे की खेती संभव होती है। यही नहीं कोसी नदी का पानी पीने और कृषि दोनो में इस्तेमाल होता है। साथ ही कोसी बिहार और नेपाल को जोड़ने वाली वह नदी है, जो सीमांचल और मिथिला के सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन को बहुत गहरे तक प्रभावित करती है। यह नदी मिथिला और सीमांचल क्षेत्र की लोकगाथाओं और लोकगीतों का हिस्सा है। इसे मातृस्वरूपा माना जाता है और लोकगीतों और त्योहारों में कोसी का जिक्र आता है। कोसी नदी के पानी से बनने वाली विद्युत ऊर्जा से तटबंधीय सड़कें और क्षेत्रीय विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस तरह अगर कोसी नदी ने बार बार बाढ़ और तबाही दी है, तो वहीं इसी ने बिहार को उपजाऊ कृषि व्यवस्था, सिंचाई की सुविधा और कृषि आधारित समृद्ध जीवन भी दिया है।

बिहार में होता है तेज प्रवाह: जब तक कोसी नेपाल में बहती है यह इतनी बड़ी और भयावह वेग वाली नदी नहीं होती, जितना बिहार के सुपौल जिले में प्रवेश के बाद फूटती है। कोसी नदी में प्रवाहित जल की मात्रा 2166 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड है, जबकि मानसून के दिनों में इसका यही प्रवाह 18000 क्यूबिक मीटर प्रति सेकेंड हो जाता है, इससे इसके प्रचंड वेग का अंदाजा लगाया जा सकता है। कोसी नदी का कैचमेंट एरिया लगभग 74,500 वर्ग किलोमीटर (नेपाल और भारत में मिलाकर) है। इसीलिए मानसून के मौसम में इसका जलप्रवाह देश की दो बड़ी गंगा और ब्रह्मपुत्र नदियों के बाद सबसे ज्यादा होता है। *

बॉलीवुड / हेमंत पाल

एक समय तक ग्रामीण परिवेश और गांव की मिट्टी की सोंधी महक वाली फिल्में खूब बनती और पसंद की जाती थीं। लेकिन जैसे-जैसे व्यावसायिकता हावी होती गई और लोगों के जीवन में शहरीकरण बढ़ता गया, फिल्मी पर्दे से गांव गायब होने लगे। फिल्मों के बदलते ट्रेंड पर एक नजर।

फिल्मी कहानियों में अब नजर नहीं आते गांव

हाल के वर्षों में आई हिंदी फिल्मों की बात करें तो उसमें गांव और ग्रामीण परिवेश की कहानियां बिल्कुल गायब रही हैं या न के बराबर ही नजर आई हैं। कथानकों से गांव विलुप्त होने का मतलब है, देश की 60% आबादी सिनेमा से गायब हो गई। अब जो फिल्में बनाई जा रही हैं, उनकी कहानियां 40% शहरी आबादी पर केंद्रित रहती हैं। इस सच्चाई को भी नकारा नहीं जा सकता कि गांव के जीवन की कहानियों से हिंदी सिनेमा का बॉक्स ऑफिस समृद्ध नहीं हो सकता। लेकिन समानांतर सिनेमा का तो मूल आधार ही ग्रामीण पृष्ठभूमि होती है, उसे ही इन कहानियों का प्रतिबिंब कहा जाता है। 'अंकुर', 'पार', 'दो बीघा जमीन', 'सूरज का सातवां घोड़ा' और 'अंतर्नाद' जैसी फिल्में ग्रामीण भारत का प्रतिनिधित्व करने में सफल रहीं। लेकिन अब ऐसी फिल्में भी नहीं बनती हैं।

गांवों से दूर हो रही फिल्में: याद कीजिए कि पिछले कुछ सालों में ऐसी कोई नई फिल्म देखी, जिसमें गांव, वहां का जीवन और गांव वालों की पीड़ा नजर आई हो! हाल ही में एक फिल्म 'लापता लेडीज' जरूर आई, पर उसका कथानक गांव पर केंद्रित न होकर, बदल गई दो दुल्हनों का था। याद नहीं आता कि आमिर खान की 'लगान' के बाद ऐसी कोई फिल्म आई हो, जिसकी पूरी कहानी गांव पर केंद्रित रही हो। आज के दौर में जो फिल्में आ रही हैं, वो हाई-सोसायटी लाइफस्टाइल और षडयंत्रों के आस-पास घूमती कहानियां हैं। उनमें कॉरपोरेट कल्चर होता है, बिजनेस के जरिए साजिशें रची जाती हैं, कंपनियों को टेकओवर करने की चालें होती हैं।

'मदर इंडिया' में दिखा वास्तविक ग्राम्य जीवन

ग्रामीण परिवेश पर बनी हिट फिल्म 'लगान'

'स्वदेश' में भी दिखी ग्रामीण परिवेश की झलक

आर्थिक कारण हैं जिम्मेदार: आज स्थिति यह है कि ज्यादातर फिल्में सौ, दो सौ और पांच सौ करोड़ के बिजनेस का लक्ष्य लेकर बनाई जाती हैं। कमाई की यही होड़ हिंदी फिल्मों से गांव के गायब होने का सबसे बड़ा कारण है। फिल्मकारों की नजर में गांव की कहानियों पर फिल्में बनाना कमाऊ विषय नहीं है। अब किसी फिल्म में गांव दिखाई भी देता है, तो किसी और संदर्भ में। मिसाल के तौर पर 'स्वदेश' जैसी फिल्म में ऐसी कोशिश की गई लेकिन यह ग्रामीण परिवेश की फिल्म नहीं थी, बल्कि स्वदेश वापसी पर आधारित थी। इस बीच पहलवानी पर 'दंगल' फिल्म आई, पर इसमें भी गांव मूल रूप में नहीं दिखा। कुछ साल पहले 'पीपली लाइव' आई थी, जो गांव की सच्चाई और समस्याओं वाली फिल्म थी। इसमें किसानों के लिए बनी योजनाओं को बाबुओं और अफसरों द्वारा हड़पने का जिक्र ज्यादा था। लेकिन बड़े तबके को यह फिल्म समझ में ही नहीं आई सो आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं रही।

ग्रामीण फिल्मों का था सुनहरा दौर: सिनेमा का एक दौर ऐसा भी आया था, जब गांव और गांव वाले ही सिनेमा की पहचान हुआ करते थे। लेकिन जैसे-जैसे सिनेमा का बाजार बढ़ा, परदे से गांव गायब होते गए। फिल्मों का इतिहास टटोला जाए, तो शुरुआती फिल्मों का कथानक गांव की पगडंडियों से होकर ही गुजरा। वी. शांताराम की 'दो बीघा जमीन', विमल रॉय की 'यादगार' और 'बंदिनी,' राज कपूर की 'आवारा', 'श्री 420' और 'बूट पॉलिश' ग्रामीण परिवेश की ऐसी फिल्में थीं, जिन्होंने देश और दुनिया को वहां की समस्याओं और उनके जीवन से रूबरू करवाया था। गांव के जीवन पर बनीं इन फिल्मों में एक अलग सी महक होती थी।

धीरे-धीरे दूर हो गई गांव की महक: सिनेमा के परदे से गांव की मिट्टी की सौंधी महक ही नहीं, लोकगीत भी गायब हो गए। यह दौर एक दो सालों में नहीं आया। 80 के दशक के बाद से ही फिल्मकारों ने धीरे-धीरे गांवों की धूलभरी पगडंडी को छोड़ दिया था। फिल्मों में खेत-खलिहान, लहलहाती फसलें, हल चलाते किसान, खेत जोतते ट्रैक्टर, गांव की चौपाल और वहां की पंचायतें गायब हैं। ओटीटी प्लेटफॉर्म की कुछ वेब सीरीज में गांव जरूर दिखाई दिए पर उनका फोकस अपराध और अपराधियों पर फोकस होता है। वास्तव में ग्रामीण इलाकों, गांव की कहानियों और किसानों के किरदार में निर्देशक, निर्माता और यहां तक कि दर्शकों की भी रुचि नहीं है।

अब ट्रेंड पर बनती हैं फिल्में: अब तो यह हालात हैं कि गांव का जीवन परदे से लगभग गायब ही हो गया है। अब तो एक फार्मूला हिट होते ही उस जैसी फिल्में बनने लगती हैं। आजकल यही ट्रेंड बन गया है। लेकिन किसी फिल्मकार ने 'लगान' की सफलता के बाद भी उसका अनुसरण नहीं किया। ब्लॉक बस्टर सफल हिंदी फिल्म 'शोले' वास्तव में रामगढ़ गांव की कहानी थी। लेकिन इस फिल्म में भी गांव वास्तविक रूप में नहीं था। जो गांव था, वो डाकू गब्बर सिंह और बदला लेने वाले ठाकुर साहब के बीच कहीं गुम हो गया था।

रामगढ़ गांव की पृष्ठभूमि पर बनी 'शोले'

अब तो ग्रामीण जिंदगी और वहां के रीति-रिवाजों पर फिल्में बनाने के लिए पहचाने जाने वाले राजश्री प्रोडक्शंस भी संयुक्त परिवारों और उसकी साजिशों की कहानियों पर मल्टीस्टारर फिल्में बनाने लगा है। 'नदिया के पार', 'बालिका वधु' और 'गीत गाता चल' जैसी बेहतरीन फिल्में बनाने वाली यह फिल्म निर्माण कंपनी भी गांव से शहर पहुंच गई है। दरअसल, सारा मामला व्यावसायिकता के खेल का है। ऐसे में भला कौन पिछड़ना चाहेगा। इसीलिए फिल्मी पर्दे से गांव दूर होते जा रहे हैं। *